Postal Reg. No.GDP45/2023-2025

अल्लाह तआला का आदेश

مِنۡ قَبۡلُ هُدًى لِّلنَّاسِ
وَاَنۡزَلَ الۡفُرۡقَانَ ؕ اِنَّ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمۡ عَذَابٌ شَدِيۡدٌ ؕ
وَاللّٰهُ عَزِيۡزٌ ذُو انۡتِقَامٍ ○

(सूरः आलेइमरान: 5)

अनुवाद : पहले, लोगों के लिए मार्गदर्शन के रूप में और उसी ने फ़ुरक़ान (सत्य-असत्य में अंतर करने वाली किताब) उतारी। निस्संदेह उन लोगों के लिए जिन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया है, कठोर यातना (निर्धारित) है। और अल्लाह पूर्ण प्रभुत्व वाला (और) बदला लेने वाला है।

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ نَحۡمَدُهٗ وَنُصَلِّيۡ عَلٰى رَسُوۡلِهِ الۡكَرِيۡمِ وَعَلٰى عَبۡدِهِ الۡمَسِيۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّةٌ

वर्ष- 10
अंक - 45
मूल्य 600 रुपए वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

14 जमादिउल अव्वल, 1446-47 हिज्री क़मरी, 06 नबुव्वत 1404 हिज्री शम्सी, 06 नवम्बर 2025 ई.

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

वज़ू के फ़ायदे और बरकतें

हज़रत अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं कि आप हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: जब मुसलमान और ईमान वाला बंदा वज़ू करता है और अपना मुंह धोता है तो पानी के अंतिम बूंद के साथ उसकी वे सारी बुराइयाँ धुल जाती हैं जो उसकी आँखों से हुई हों। फिर जब वह अपने दोनों हाथ धोता है तो पानी के अंतिम बूंद के साथ उसकी वे सारी गलतियाँ धुल जाती हैं जो उसके दोनों हाथों से हुई हों, यहाँ तक कि वह पापों से पवित्र होकर निकलता है। फिर जब वह अपने पैर धोता है तो उसकी वे सारी गलतियाँ पानी के अंतिम बूंद के साथ धुल जाती हैं जो उसके पैरों से हुई हों, यहाँ तक कि वह सभी पापों से पवित्र होकर निकलता है।

(मुस्लिम, अध्याय: ख़ुरूजुल ख़ताया मा माइल वज़ू) (सन्दर्भ: हदीक़तुस् सालेहीन, लेखक मलिक सैफ़ुर्रहमान साहब, हदीस 199)

★ ★ ★

जो व्यक्ति जानबूझकर आलस्य करता है और बा जमाअत नमाज़ में शामिल होने में देर करता है, उसकी नमाज़ ही अमान्य है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

इमाम के पीछे फ़ातिहा

इस बात का उल्लेख आया कि जो व्यक्ति सामूहिक नमाज़ में रुकू में पहुँचकर शामिल हो, उसकी रकात होती है या नहीं। हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने दूसरे विद्वानों की राय पूछी। विभिन्न इस्लामी समुदायों के मत इस विषय में बताए गए। अंत में हज़रत अलैहिस्सलाम ने निर्णय दिया और फ़रमाया:

"हमारा मत तो यही है कि फातिहतुल किताब (सूरः फातिहा) के बिना नमाज़ नहीं है। व्यक्ति इमाम के पीछे हो या अकेला हो, हर स्थिति में उसे चाहिए कि सूरः फातिहा पढ़े, किंतु इमाम को चाहिए कि जल्दी-जल्दी सूरह फातिहा न पढ़े बल्कि ठहर-ठहर कर पढ़े ताकि पीछे खड़े होने वाला (मुक़्तदी) सुन भी ले और स्वयं भी पढ़ ले या हर आयत के बाद इमाम इतना ठहर जाए कि मुक़्तदी भी उस आयत को पढ़ ले। किसी भी स्थिति में मुक़्तदी को यह अवसर देना चाहिए कि वह सुन भी ले और स्वयं भी पढ़ ले। सूरः फातिहा का पढ़ना आवश्यक है, क्योंकि वह उम्मुल किताब (किताब की जननी) है, लेकिन जो व्यक्ति अपनी ओर से पूरी कोशिश के बावजूद, जो वह नमाज़ में सम्मिलित होने के लिए करता है, अंत में रुकू में ही आकर मिल पाता है और उससे पहले नहीं मिल सका, तो उसकी रकात हो गई, भले ही उसने सूरह फातिहा इसमें नहीं पढ़ी। क्योंकि पैगंबर की वाणी (हदीस) में आया है कि जिसने रुकू को पा लिया उसकी रकात हो गई। मामले दो प्रकार के होते हैं। एक ओर तो हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया और बल दिया कि नमाज़ में सूरः फातिहा अवश्य पढ़ें। वह उम्मुल किताब है और वास्तविक नमाज़ वही है, किंतु जो व्यक्ति अपनी ओर से पूरी कोशिश और जल्दी करने के बावजूद रुकू में ही आकर मिल पाता है, तो चूँकि धर्म की नींव आसानी और नरमी पर है, इसलिए हज़रत रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि उसकी रकात हो गई। वह सूरह फातिहा का इनकार करने वाला नहीं है बल्कि देर से पहुँचने के कारण रियायत (छूट) पर अमल करता है। मेरा हृदय अल्लाह ने ऐसा बनाया है कि अनुचित कार्य में मुझे रुकावट हो जाती है और मेरा मन नहीं चाहता कि मैं उसे करूँ और यह स्पष्ट है कि जब नमाज़ में एक व्यक्ति ने तीन भागों को पूरा पा लिया और एक भाग में किसी मजबूरी के कारण देर से मिल सका है तो क्या हर्ज है। मनुष्य को चाहिए कि रियायत पर अमल करे। हाँ, जो व्यक्ति जानबूझकर आलस्य करता है और सामूहिक नमाज़ में शामिल होने में देर करता है तो उसकी नमाज़ ही अमान्य है।

हज़रत मसीह इब्न मरयम अलैहिस्सलाम एक सौ बीस वर्ष की आयु तक अल्लाह तआला का संदेश लोगों को पहुँचाते रहे और कश्मीर में देहांत हुआ, श्रीनगर के मोहल्ला खानयार में दफ़न हुए जहाँ आज तक उनकी कब्र पाई जाती है।

सैय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूरह अल-मोमिनून आयत संख्या 51

وَجَعَلۡنَا ابۡنَ مَرۡيَمَ وَاُمَّهٗۤ اٰيَةً وَّاٰوَيۡنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبۡوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيۡنٍ

"व जाअलना इब्ना मरयम व उम्महू आयतन व आवैनाहुमा इला रब्वतिन ज़ाति क़रारिन व मईनिन" की व्याख्या में फ़रमाते हैं:

अल्लाह तआला ने अपने अनुग्रह से हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को सलीब से बचा लिया था, इसलिए आवश्यक था कि अब वह किसी अन्य देश को प्रवास कर जाते क्योंकि देश शाम रोम के सम्राट के अधीन था और वह सम्राट के विद्रोही घोषित हो चुके थे। यदि हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम इस देश में रहते तो दोबारा गिरफ्तार कर लिए जाते, इसलिए अल्लाह तआला ने उन्हें प्रवास का आदेश दे दिया और फिर अपने अनुग्रह और कृपा से उन्हें एक ऐसे उच्च स्थान पर स्थान दिया जो उनके शत्रुओं की पहुँच से सुरक्षित था और जहाँ स्वच्छ जल के झरने बहते थे। यह स्थान, जैसा कि ऐतिहासिक साक्ष्यों से सिद्ध है, कश्मीर का क्षेत्र है जिसे उच्च स्तर के झरनों और हरे-भरे स्थानों तथा अत्यंत उत्तम जलवायु के कारण लोग स्वर्ग के समान बताते हैं बल्कि स्वयं 'कश्मीर' शब्द हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के कश्मीर की यात्रा की ओर स्पष्ट संकेत करता है क्योंकि कश्मीरी भाषा में कश्मीर को 'कशीर' कहते हैं जो वास्तव में एक इब्रानी शब्द है जो 'काफ' और 'आशेर' से मिलकर बना है। 'काफ' के अर्थ 'समान' के हैं और 'आशेर' इब्रानी भाषा में देश शाम को कहते हैं। इसलिए 'कशीर' के अर्थ थे 'देश शाम के समान' किंतु अधिक प्रयोग से 'अलिफ' गिर गया और केवल 'कशीर' रह गया। जिसे बाद में अन्य जातियों के लोगों ने धीरे-धीरे 'कश्मीर' बना दिया। किंतु यह आश्चर्यजनक बात है कि कश्मीरी भाषा में अब तक कश्मीर को 'कशीर' ही कहा जाता है और इसी प्रकार लिखा जाता है और कश्मीर के निवासियों को कश्मीरी लोग 'काशिर' कहते हैं और पंजाबी लोग 'कश्मीरी' कहते हैं। फिर केवल कश्मीर शब्द ही इस बात का प्रमाण नहीं कि किसी समय में इब्रानी जाति इस स्थान पर अवश्य बस चुकी है बल्कि ऐतिहासिक पुस्तकों से स्पष्ट रूप से सिद्ध है कि आज से दो हज़ार वर्ष पहले एक इसराइली पैगंबर कश्मीर में आया था जो बनी इसराइल में से था और 'शहज़ादा पैगंबर' कहलाता था, उसकी कब्र मोहल्ला खानयार में है जो 'यूज़ आसिफ' की कब्र के नाम से प्रसिद्ध है। यह शब्द, जैसा कि अहमदीय्या समुदाय के संस्थापक ने अपनी पुस्तकों में लिखा है, 'यसूऊ आसिफ' का बिगड़ा हुआ रूप है। 'आसिफ' इब्रानी भाषा में उस व्यक्ति को कहते हैं जो अपनी जाति की खोज करने वाला हो और 'यूज़' शब्द 'यसूऊ' से बिगड़ा हुआ है। इस प्रकार मसीह अलैहिस्सलाम का यह नाम इसलिए रखा गया कि वह इसराइल के उन दस गोत्रों की खोज और उनको

शेष पृष्ठ 07 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हुनैन के अवसर पर मदीना के सहायकों (अंसार) से फ़रमाया:
क्या तुम्हें यह बात पसंद नहीं कि लोग तो भेड़-बकरियाँ और ऊँट लेकर अपने घरों को लौट जाएँ और तुम अल्लाह के रसूल को अपने साथ लेकर जाओ?
अल्लाह की क़सम ! जो प्रतिष्ठा तुम ले जा रहे हो वह उससे कहीं अधिक उत्तम है जो वे लोग लेकर जाएँगे।
रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार के लिए प्रार्थना करते हुए फ़रमाया। हे अल्लाह! अंसार पर दया कर। अंसार की संतान पर दया कर और अंसार की आने वाली पीढ़ियों पर भी दया कर।
आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी ऊँटनी के पास गए और उसका एक बाल तोड़ा और उसे ऊँचा किया और फ़रमाया हे लोगो! मुझे तुम्हारे धन में से इस बाल के बराबर भी आवश्यकता नहीं सिवाय उस पाँचवें हिस्से के जो अरब के नियम के अनुसार सरकार का हिस्सा है और वह पाँचवाँ हिस्सा भी मैं अपने ऊपर खर्च नहीं करता बल्कि वह भी तुम्हीं लोगों के कार्यों पर खर्च किया जाता है। और याद रखो कि विश्वासघात करने वाला मनुष्य प्रलय के दिन अल्लाह के सामने इस विश्वासघात के कारण अपमानित होगा।
आज से अंसारुल्लाह का सम्मेलन भी हो रहा है।
अंसार को भी मैं यह कहता हूँ कि यदि किसी के मन में अपने अनुभव और सेवा के संदर्भ में कोई विचार उत्पन्न होता है तो वह उसे दूर कर दे और अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने का प्रयास करे।

युद्ध हुनैन में घटित परिस्थितियों और घटनाओं के संदर्भ में पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के जीवन का प्रेरणादायक वर्णन

माननीय फहीमुद्दीन नासिर साहब, मुबल्लिग़ सिल्सिला रोमानिया और माननीय अब्दुल अलीम फारूकी साहब, कनाडा का सद्गति उल्लेख और अनुपस्थित नमाज़े जनाजा
विदेश में धर्म के लिए बलिदान हुए। इस दृष्टि से फहीम नासिर साहब का स्थान भी शहीद का स्थान ही है।
अंतिम साँस तक अपनी वचनबद्धता को निभाया और अच्छी तरह निभाया। हमेशा मैंने भी देखा है कि उनके चेहरे पर मुस्कान ही रहती थी।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मौ'मेनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 26 सितम्बर 2025 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ. أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ. بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ. اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ. مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ. إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ إِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ. اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ. صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ. غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

पिछले उपदेश (खुत्बा) में हुनैन की लूट के माल की बंटवारे का उल्लेख हो रहा था।

इस संदर्भ में और अधिक विवरण भी है। जैसा कि पहले वर्णन हो चुका है कि आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब लूट का माल बाँटा और योद्धाओं को उनके हिस्से भी प्रदान कर दिए तो जो पाँचवाँ हिस्सा (खुम्स) था वह बल्कि लगभग संपूर्ण आप ने नव-मुसलमानों के दिल जीतने (मुअल्लफ़तुल क़ुलूब) के लिए क़ुरैश के सरदारों और अन्य अरब सरदारों में बाँट दिया कि किसी को सौ ऊँट दिए और किसी को पचास ऊँट। इतनी अधिक मात्रा में दूसरों को धन दिए जाने पर अंसार के कुछ युवाओं ने इसे महसूस किया और ऐसा समझा कि जैसे अपनी सेवाओं और पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के प्रति प्रेम के कारण वह दूसरों की तुलना में अधिक अधिकारी थे। इसलिए उन्होंने कहना आरंभ कर दिया कि "यग़फिरुल्लाहु लि रसूलिल्लाह, यु'ती क़ुरैशन व यदाउना व सुयूफ़ुना तक़्तिरु मिन दिमाइहिम" अर्थात अल्लाह रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को क्षमा करे, आप क़ुरैश को दे रहे हैं और हमें छोड़ रहे हैं। यह उनके मन में उत्पन्न हुआ विचार था। वे कहते हैं, हालाँकि हमारी तलवारों से उन शत्रुओं का खून टपक रहा है।

(बुखारी, पुस्तक: फ़र्ज़ुल खुम्स, अध्याय: मा कानन नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यु'तील मुअल्लफ़त क़ुलूबिहिम, 3147) (सब्लुल् हुदा वल् इरशाद भाग 5 पृष्ठ 396, दारुल कुतुब इल्मिया 1993 ई.)(दाइरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 9 पृष्ठ 290, बज़्मे इक़्बाल लाहौर)

इसी प्रकार उनमें से किसी ने यह भी कहा कि जब परिस्थितियाँ कठिन और प्रतिकूल हों तो हमें बुलाया जाए और लूट का माल हमारे अलावा अन्य लोगों को दिया जाए।

(सहीह इब्ने हिब्बान, पुस्तक: अस-सीर, अध्याय: ज़िक्र मा युस्तहब्ब लिल इमाम अन यदऊ अन्सारहु, पृष्ठ 1287, हदीस 4769, दारुल मअरिफ़ा बैरूत 2004 ई.)

इन बातों की जानकारी जब आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को हुई तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार के प्रमुख हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हु को बुलाया। कुछ के अनुसार यह सारी बात बताने वाले भी हज़रत सअद रज़ियल्लाहु अन्हु ही थे। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उनसे पूछा: फा ऐना अनता मिन ज़ालिका या सअद। हे सअद! तुम्हारी इसके संबंध में क्या राय है? तो उन्होंने निवेदन किया हे अल्लाह के रसूल! मैं भी अपनी जाति ही का सदस्य हूँ। मुझे भी यह बात प्रभावित कर सकती है। इस पर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सअद को फ़रमाया कि सभी अंसार को एकत्रित करो। इस प्रकार सब एक तंबू में इकट्ठे हुए। कुछ मक्का से आए विस्थापित (मुहाजिरीन) भी सम्मिलित हो गए तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मैंने केवल अंसार को बुलाया है और मुहाजिरीन को वहाँ से वापस भेज दिया गया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार को संबोधित करते हुए फ़रमाया। हे अंसार की समुदाय! जो बात तुम्हारी ओर से मुझे मिली है वह क्या है? रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इस बात पर अंसार के विवेकशील लोगों ने कहा हे अल्लाह के रसूल

सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम!

हमारे समझदार लोगों में से किसी ने ऐसी कोई बात नहीं की है, बल्कि कुछ भावुक युवाओं ने कहा है कि अल्लाह के पैगंबर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की क्षमा करे, आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम क़ुरैश को दे रहे हैं और हम आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के दान से वंचित हैं जबकि हमारी तलवारों से उन शत्रुओं का खून टपक रहा है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार पर किए गए उपकारों और अनुग्रहों का उल्लेख करते हुए अंसार को संबोधित करते हुए फ़रमाया: हे अंसार! क्या मैं जब तुमसे मिला था तो मैंने तुम्हें गुमराह नहीं पाया था और फिर अल्लाह ने मेरे द्वारा तुम्हें मार्गदर्शन दिया और तुम बिखरी हुई और अलग-थलग जाति थे और एक-दूसरे के शत्रु थे, अल्लाह ने मेरे द्वारा तुम्हारे अंदर आपसी प्रेम और स्नेह उत्पन्न कर दिया और तुम निर्धन और अभावग्रस्त थे और अल्लाह ने मेरे कारण तुम्हें धनी और संपन्न कर दिया। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जो भी बात करते अंसार उस पर कहते। "अल्लाहु व रसूलुहू अमन्न"। कि यह सब अल्लाह और उसके रसूल का उपकार है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार की ओर से जब यह उत्तर सुना तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि तुम मुझे उत्तर क्यों नहीं देते। वे कहने लगे हे अल्लाह के रसूल! हम क्या उत्तर दें। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यदि तुम चाहो तो मुझे यह उत्तर दे सकते हो और तुम सच कह रहे होगे और तुम्हारी बात की पुष्टि की जाएगी। तुम कह सकते हो कि हे अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! आप हमारे पास उस स्थिति में आए कि आपको झुठलाया गया था और आपकी अस्वीकृति की गई थी लेकिन हमने आपकी पुष्टि की और आप सहायक-विहीन थे और लोगों ने आपको उपेक्षित किया था लेकिन हमने आपकी सहायता की और उन लोगों ने आपको अपने शहर से निकाल दिया था लेकिन हमने आपको शरण दी और आप बहुत सारी जिम्मेदारियों वाले (परिवार के मुखिया) थे और हमने आपकी चिंता की। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह बात सुनकर कोई भी अंसारी न बोला। सभी के सभी सिर झुकाए आपकी बातें सुन रहे थे और लज्जित थे। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार को यह भी बताया कि मैंने क़ुरैश के साथ ऐसा व्यवहार क्यों किया है। आपने फ़रमाया कि तुम लोग तो पहले ही इस्लाम स्वीकार कर चुके थे और इस्लाम और ईमान तुम्हारे हृदयों में अच्छी तरह स्थापित हो चुका था लेकिन क़ुरैश में अधिकांश लोग मक्का की विजय के अवसर पर नए-नए मुसलमान हुए थे बल्कि अनेक तो ऐसे थे जो अभी तक इस्लाम से नहीं जुड़े थे और पुराने ईमान वालों की तुलना में यह नव-मुस्लिम स्नेह-संबंध और पुरस्कार व सम्मान के अधिक हकदार थे ताकि इस्लाम उनके हृदयों में बैठ जाए और क़ुरैश इसलिए भी इस पुरस्कार के अधिकारी थे कि अनेक युद्धों में उनका बहुत कुछ नष्ट हो चुका था इसलिए मेरा उद्देश्य यह था कि उनका दिल रखा जाए और यह पूर्ण रूप से इस्लाम और ईमान के दायरे में आ जाएँ।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि क्या तुम्हें यह बात पसंद नहीं कि लोग तो भेड़-बकरियाँ और ऊँट लेकर अपने घरों को लौट जाएँ और तुम अल्लाह के रसूल को अपने साथ लेकर जाओ? अल्लाह की क़सम! जो प्रतिष्ठा तुम ले जा रहे हो वह उससे कहीं अधिक उत्तम है जो वे लोग लेकर जाएँगे।

आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया यदि लोग किसी घाटी या मार्ग में चलें और अंसार किसी घाटी या मार्ग में चलें तो मैं भी अंसार के साथ चलना पसंद करूँगा। अर्थात मैं अंसार के समूह में शामिल होंगा। फ़रमाया कि लोग मेरा बाहरी वस्त्र हैं जबकि अंसार मेरा आंतरिक वस्त्र हैं अर्थात कपड़ा जो शरीर के साथ लगा हुआ होता है।

फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि हे अंसार! मेरे बाद तुम अपने ऊपर दूसरों को प्राथमिकता पाते देखोगे किंतु तुम धैर्य करना यहाँ तक कि हौज़े कौसर (जन्नत में एक जलाशय) पर तुम्हारी मुझसे मुलाकात हो जाए अर्थात प्रलय के दिन मुलाकात होगी और नेतृत्व तुम्हें नहीं मिलेगा। अंत में रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अंसार के लिए प्रार्थना करते हुए फ़रमाया। हे अल्लाह! अंसार पर दया कर। अंसार की संतान पर दया कर और अंसार की आने वाली पीढ़ियों पर भी दया कर।

वर्णनकर्ता कहते हैं कि आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यह संबोधन फरमा रहे थे और अंसार रोते जा रहे थे यहाँ तक कि उनकी दाढ़ियाँ उनके आँसुओं से भीग गईं और वह यही कहते चले जा रहे थे कि "रज़ीना बि रसूलिल्लाह क़िसमन व हज़्ज़ाँ" कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बंटवारी और अपने हिस्से पर हृदय और आत्मा से संतुष्ट हैं।

(सहीह बुखारी, पुस्तक: फर्ज़ुल खुम्स, अध्याय: मा कानन नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम यु'तील मुअल्लफ़त क़ुलूबिहिम... हदीस 3147)(सहीह बुखारी, पुस्तक: अल-मग़ाज़ी, अध्याय: ग़ज़वतुत ताइफ... हदीस 4331) (मुसनद अहमद बिन हंबल भाग 4 पृष्ठ 192-193, आलमुल कुतुब)(अस-सीरतुन नबविय्या कमा जाअत फिल अहादीसिस सहीहा भाग 4 पृष्ठ 81, मकतबतुल उबैकान, अर-रियाज़ 2014 ई.)(सब्लुल् हुदा वल् इरशाद भाग 5 पृष्ठ 403, दारुल कुतुब इल्मिया 1993 ई.)(दाइरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 9 पृष्ठ 293-298, बज़्मे इक़्बाल लाहौर)

कभी-कभी असावधानी में कही गई बात बहुत दूरगामी परिणाम रखती है। यद्यपि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बंटवारी पर अंसार के युवाओं ने असंतोष प्रकट किया था लेकिन सभी ने नहीं किया था, किंतु यह अल्लाह और अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इतनी नाराज़ करने वाली बात थी कि अंसार को सदैव इसका परिणाम भुगतना पड़ा। इसलिए इसका उल्लेख करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जब मक्का जीता तो मक्का के लोग आपके पास आए जिनकी दृष्टि ईमान से पूर्णतः परिचित न होने के कारण अभी दुनिया ही की ओर थीं। इसके बादके एक युद्ध में कुछ धन मुसलमानों के हाथ लगा था। आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वह धन उन लोगों में बाँट दिए। एक अंसारी युवा ने किसी सभा में कहा कि हमारी तलवारों से खून टपक रहा है और रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने धन अपने संबंधियों को दे दिए। आपको इसकी जानकारी हुई तो अंसार के बड़े लोगों को बुलाया और पूछा कि मुझे ऐसी बात मिली है। अंसार रो पड़े और कहा कि किसी मूर्ख ने की है। आपने फ़रमाया नहीं हे अंसार! तुम कह सकते हो कि हमने मुहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) को उस समय स्थान दिया जब उसे कोई स्थान नहीं देता था और उसके शहर वालों ने उसे निकाल दिया था। फिर उसके लिए प्रतिष्ठा और विजय प्राप्त की तो उसने धन अपने संबंधियों को बाँट दिए। इस पर अंसार की चीखें निकल गईं और उन्होंने फिर कहा कि हे अल्लाह के रसूल! हम ऐसा नहीं कहते। फिर आपने फ़रमाया कि तुम उसी बात को एक और तरह से भी कह सकते हो और वह इस तरह कि जिस व्यक्ति को अल्लाह ने संपूर्ण विश्व के मार्गदर्शन के लिए भेजा वह मक्का की चीज़ थी किंतु अल्लाह उसे मदीना में ले गया और फिर अल्लाह ने अपने बल और शक्ति से मक्का को उसके लिए जीत लिया। उस समय मक्का वालों का विचार था कि उनकी चीज़ उन्हें मिल जाएगी किंतु मक्का वाले भेड़ और बकरियों को ले गए और मदीना वाले अल्लाह के रसूल को लेकर अपने शहर की ओर चले गए। फिर आपने फ़रमाया: निस्संदेह यह बात एक मूर्ख के मुख से निकली है किंतु इसके कारण अब तुम्हें इस दुनिया की सरकार नहीं मिल सकती। अब तुम्हारी सेवाओं का बदला तुम्हें हौज़े कौसर पर ही मिलेगा। देख लो" आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं देख लो। इतिहास बताता है कि "तेरह शताब्दियाँ बीत चुकी हैं और चौदहवीं शताब्दी बीत रही थी" बल्कि अब तो वह भी बीत गई। "इस अवधि में हर जाति ही इस्लाम के कारण शासक बनी है किंतु कोई अंसारी शासक नहीं बन सका। इसलिए कभी-कभी एक व्यक्ति का कथन संपूर्ण जाति के लिए हानि का कारण बन सकता है।"

(खुत्बाते महमूद भाग 17 पृष्ठ 728, शुक्रवार दिनांक 4 दिसंबर 1936 ई.)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु ने यह घटना अपने एक उपदेश में वर्णन की और इसे वर्णन करके समुदाय को जो शिक्षा दी वह आज भी हमारे लिए उसी प्रकार महत्वपूर्ण है जैसे उस समय थी। आपने फ़रमाया कि वे लोग जो बलिदान इसलिए करते हैं कि उन्हें कोई पद मिले या धन आदि मिले वह कदापि मेरे बुलाने पर अर्थात उस समय के खलीफा के बुलाने पर बलिदान के लिए न आएँ बल्कि वही लोग आएँ जो अल्लाह के लिए बलिदान करते हैं क्योंकि मैं तो स्वयं कमजोर और बीमार मनुष्य हूँ। मैं किसी का उपकार नहीं उठा सकता। इसलिए मैं अपने लिए नहीं माँगता। जो अल्लाह तआला के लिए देता है वह दे और अल्लाह तआला उसका प्रतिफल भी देगा। अल्लाह तआला पर भरोसा रखना चाहिए, यदि वह चाहे तो इस दुनिया में दे दे और यदि वह चाहे तो परलोक में दे। किसी भी स्थिति में जो निष्ठापूर्वक बलिदान करता है उसका बलिदान व्यर्थ नहीं जाता। ईमान वाले के बलिदान को कोई व्यर्थ नहीं कर सकता। इसलिए बलिदान करने वाले वही लोग हैं जो अल्लाह को ध्यान में रखते हैं न कि दुनिया को।

(उद्धृत: खुत्बाते महमूद भाग 17 पृष्ठ 728-729, शुक्रवार का उपदेश दिनांक 4 दिसंबर 1936 ई.)

इसलिए हमेशा बलिदान और पद के लिए अल्लाह तआला की प्रसन्नता को ध्यान में रखना चाहिए, तभी वह अल्लाह तआला के वास्तविक अनुग्रह को प्राप्त करने वाले होंगे। एक आयु पर पहुँच कर समुदाय के सदस्यों में भी यह विचार उत्पन्न हो

जाता है कि हमारा इतना अनुभव है, हमने इतना कार्य किया है, हमें इसका पुरस्कार मिलना चाहिए जो नहीं दिया जाता। उन्हें सोचना चाहिए कि क्या केवल दुनिया का पुरस्कार लेना है या अल्लाह तआला के अनुग्रहों का उत्तराधिकारी बनना है?

अंसारुल्लाह का सम्मेलन भी आज से हो रहा है। क्योंकि इस आयु में जब अनुभव प्राप्त हो जाता है तो इस संदर्भ में विचार आता है। इसलिए अंसार को भी मैं यह कहता हूँ कि यदि किसी के मन में अपने अनुभव और सेवा के संदर्भ में कोई विचार उत्पन्न होता है तो वह उसे दूर कर दे और अल्लाह तआला की प्रसन्नता प्राप्त करने का प्रयास करे।

इस अवसर पर बेदुइनों की अधीरता का भी उल्लेख मिलता है। लूट के माल की बंटवारे के समय कुछ बेदुइन लोग भी आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आस-पास इकट्ठे हो गए और माल की माँग करने लगे। उनके भीड़ के कारण रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का पवित्र चोगा एक कंटीली झाड़ी से अटक गया और कुछ धक्कम-धक्का होने लगी तो आपने फ़रमाया मेरा चोगा तो मुझे वापस दे दो और फिर उन काँटों भरे पेड़ों की ओर संकेत करते हुए फ़रमाया। यदि इन काँटों के बराबर भी मेरे पास ऊँट होते तो वह भी मैं सब तुम में बाँट देता और तुम मुझे कंजूस, झूठ बोलने वाला और कायर न पाते। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बेदुइनों की इस अशिष्टता पर उन्हें कोई फटकार नहीं लगाई, न नाराज हुए बल्कि मुस्कुराते हुए उत्तम ढंग से उनका मार्गदर्शन फ़रमाया और उन्हें धन से भी सम्मानित किया। (दाइरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 9 पृष्ठ 299, बज़्मे इक़्बाल लाहौर)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु इसका उल्लेख करते हुए फ़रमाते हैं: "इन युद्धों से निपटने के बाद वह धन जो पराजित शत्रुओं के जुर्मानों और युद्ध के मैदान में छोड़ी गई वस्तुओं से एकत्र हुए थे, नियम के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस्लामी सेना में बाँटने थे किंतु इस अवसर पर आपने उस धन को मुसलमानों में बाँटने के बजाय मक्का और आस-पास के लोगों में बाँट दिया। उन लोगों के भीतर अभी ईमान तो उत्पन्न नहीं हुआ था, बहुत से तो अभी काफिर ही थे और जो मुसलमान थे वह भी नए-नए मुसलमान हुए थे, यह उनके लिए बिल्कुल नई बात थी कि एक जाति अपना धन दूसरे लोगों में बाँट रही है। इस धन की बंटवारी से उनके मन में नेकी और ईश-भय उत्पन्न होने के बजाय लालच और भी बढ़ गया।" कुछ लोगों में। "उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के चारों ओर भीड़ लगा दी और अतिरिक्त माँगों के साथ आपको तंग करना आरंभ किया यहाँ तक कि धकेलते हुए वह आपको एक पेड़ तक ले गए और एक व्यक्ति ने तो आपका चोगा जो आपके कंधों पर रखा हुआ था पकड़ कर इस प्रकार मरोड़ना आरंभ किया कि आपका साँस रुकने लगा। आपने फ़रमाया हे लोगो! यदि मेरे पास कुछ और होता तो मैं वह भी तुम्हें दे देता, तुम मुझे कभी कंजूस या कायर नहीं पाओगे। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी ऊँटनी के पास गए और उसका एक बाल तोड़ा और उसे ऊँचा किया और फ़रमाया हे लोगो! मुझे तुम्हारे धन में से इस बाल के बराबर भी आवश्यकता नहीं सिवाय उस पाँचवें हिस्से के जो अरब के नियम के अनुसार सरकार का हिस्सा है और वह पाँचवाँ हिस्सा भी मैं अपने ऊपर खर्च नहीं करता बल्कि वह भी तुम्हीं लोगों के कार्यों पर खर्च किया जाता है। और याद रखो कि विश्वासघात करने वाला मनुष्य प्रलय के दिन अल्लाह के सामने इस विश्वासघात के कारण अपमानित होगा।

लोग कहते हैं कि मुहम्मद रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम राजशक्ति के इच्छुक थे, क्या राजाओं और जनता का ऐसा ही संबंध हुआ करता है? क्या किसी में इतनी शक्ति होती है कि राजा को इस प्रकार धकेलता हुआ ले जाए और उसके गले में अंगरखा डाल कर उसको घोंटे? अल्लाह के रसूलों के सिवा यह उदाहरण कौन दिखा सकता है किंतु इस प्रकार संपूर्ण धन गरीबों में बाँटने के बावजूद फिर भी ऐसे कठोर हृदय लोग मौजूद थे जो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की बंटवारी को न्यायपूर्ण बंटवारा नहीं समझते थे।"

(दीबाचा तफ्सीरुल कुरआन, अनवारुल उलूम भाग 20 पृष्ठ 357-358)

आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का लूट के माल की बंटवारे के संबंध में सामान्य प्रक्रिया तो यह थी कि लूट के माल में से पाँचवाँ हिस्सा (खुम्स) अलग फरमा लेते जो हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने विवेक पर बाँटते या खर्च करते थे और शेष संपूर्ण माल योद्धाओं के बीच बाँट देते थे जिसमें पैदल और घुड़सवार के अलग-अलग हिस्से होते थे किंतु हुनैन की लूट के माल की बंटवारे के संबंध में जब कुछ अंसार की ओर से यह प्रश्न या आपत्ति की गई कि हमें नबीए अकरम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने कुछ नहीं दिया और दूसरों को दे दिया तो प्रश्न उठता है क्या आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने युद्ध में भाग लेने वालों को लूट के माल में से कुछ भी नहीं दिया था या केवल उनका हिस्सा दिया था और शेष धन दूसरों में बाँटा था। किंतु जो हमारी शोध टीम है वह कहती है हमने पैगंबर के जीवन (सीरत) की जो आरंभिक और विश्वसनीय पुस्तकें देखी हैं किसी में भी स्पष्ट रूप से इसका उत्तर नहीं दिया गया है, बल्कि उनके विचार में इतिहास और सीरत की पुस्तकों का अध्ययन करने से यह ज्ञात होता है कि आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सभी भाग लेने वालों को उनका नियमित हिस्सा दिया था जो प्रत्येक को चार ऊँट या चालीस बकरियों के रूप में दिया गया और घुड़सवारों को उसका हिस्सा दिया गया और यह भी संकेत मिलता है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुम्स में से दिल जीतने के लिए लोगों को धन प्रदान फरमाए थे किंतु यह भी संभावना है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन लूट के माल में से किसी को भी कुछ न दिया हो अर्थात सामान्य नियम के अनुसार यह धन योद्धाओं में बाँटा न गया हो और सारा धन दूसरे लोगों में दिल जीतने के रूप में बाँट दिया गया हो। इसकी पुष्टि भी इतिहास और सीरत की विभिन्न पुस्तकों से होती है।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु के एक अंश से भी यही आभास मिलता है जैसा कि अभी वर्णन हुआ है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "उन युद्धों से निपटने के बाद वह धन जो पराजित शत्रुओं के जुर्मानों और युद्ध के मैदान में छोड़ी गई वस्तुओं से एकत्र हुए थे अर्थात जैसा कि बताया है, नियम के अनुसार रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को इस्लामी सेना में बाँटने थे किंतु इस अवसर पर आपने उस धन को मुसलमानों में बाँटने के बजाय मक्का और आस-पास के लोगों में बाँट दिया।"

हदीसों में वर्णन मिलते हैं कि लूट के माल की बंटवारे के दौरान एक बेदुइन रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में उपस्थित हुआ और कहने लगा हे मुहम्मद! (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) आपने मुझसे जो वादा किया था उसे पूरा करें। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया प्रसन्न हो जाओ। वह बेदुइन कहने लगा आपने बहुत बार यही कहा है कि प्रसन्न हो जाओ। मानो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने दिया कुछ नहीं। बस कहते ही रहते हैं। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को उसका यह प्रतिक्रिया बहुत अप्रिय लगी। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उसकी ओर से अपना पवित्र चेहरा हटा लिया और वहाँ अबू मूसा अशअरी और बिलाल खड़े थे, उनकी ओर अपना चेहरा करते हुए फ़रमाया कि उसने तो शुभ सूचना स्वीकार करने से इनकार कर दिया है अब तुम स्वीकार कर लो। दोनों ने सुना तो तुरंत बोले हे अल्लाह के रसूल! हमने स्वीकार कर ली। इसके बाद आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने पानी का प्याला मँगवाया और उसमें अपना हाथ और मुंह धोया। फिर आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने वह बचा हुआ पानी हज़रत अबू मूसा रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहु अन्हु को देते हुए फ़रमाया तुम दोनों इस पानी को पी लो और अपने चेहरे और सीने पर भी डाल लो और प्रसन्न हो जाओ। इस प्रकार उन्होंने प्याला लेकर ऐसा ही किया।

यहाँ पैगंबर की पत्नियों (उम्महातुल मोमिनीन) की निष्ठा और आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की पवित्र सत्ता से आशीर्वाद प्राप्त करने की ललक का एक अद्भुत और प्रशंसनीय दृश्य भी दिखाई देता है। लिखा है कि निकट ही तंबू में उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा भी थीं। ज्ञात होता है कि यह सारी घटना हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के तंबू के निकट ही हुई थी। उन्होंने परदे के पीछे से उन्हीं अर्थात जो दो साथी थे हज़रत बिलाल और हज़रत अबू मूसा, उनसे कहा कि अपनी माँ के लिए भी पानी बचा दो। इस प्रकार उन्होंने हज़रत उम्मे सलमा रज़ियल्लाहु अन्हा के लिए भी कुछ पानी प्याले में छोड़ दिया।

(सहीह बुखारी, पुस्तक: अल-मग़ाज़ी, अध्याय: ग़ज़वतुत ताइफ... हदीस: 4328) (उद्धृत: दाइरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 9 पृष्ठ 300, बज़्मे इक़्बाल लाहौर)

वर्णन है कि एक व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की सेवा में

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल, बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.

चौधरी ख़िज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

उपस्थित हुआ और उसने बकरियों का बहुत बड़ा झुंड देखा जो दो पहाड़ों के बीच एक घाटी में था। उसने आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा यह मुझे दे दीजिए। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने बिना किसी हिचकिचाहट के वह उसे दे दिया। वह यह झुंड लेकर अपनी जाति के पास गया और कहने लगा कि लोगो! मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम पर ईमान ले आओ। वह तो इतना देता है कि उसे गरीबी और अभाव का कोई भय ही नहीं होता। जीवनी लेखकों ने लिखा है कि यह घटना भी इसी अवसर की है। यह हदीस ही का वर्णन है। किंतु और भी घटनाएँ हैं जो यदि अल्लाह ने चाहा तो आगे वर्णित होंगी। (सहीह मुस्लिम, पुस्तक: अल-फ़ज़ाइल, अध्याय: फी सखाएहि सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हदीस: 2312)

(दाइरा मआरिफ़ सीरत मुहम्मद रसूलिल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम भाग 9 पृष्ठ 300, बज़्मे इक़्बाल लाहौर)

इस समय मैं कुछ स्वर्गवासी व्यक्तियों का उल्लेख करना चाहता हूँ। शुक्रवार की नमाज़ के बाद अभिषेक (जनाजा) भी पढ़वाऊँगा।

पहला उल्लेख माननीय फहीमुद्दीन नासिर साहब का है जो समुदाय के प्रचारक रोमानिया थे। पिछले दिनों बावन वर्ष की आयु में देहांत हो गया। निस्संदेह हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं। अल्लाह तआला के अनुग्रह से वह संकल्पपत्र (वसीयतनामा) लिखने वाले थे। उनके परिवार में अहमदीयता का प्रवेश उनके परदादा हज़रत मिर्ज़ा इल्मुद्दीन साहब के माध्यम से हुआ जिन्होंने पत्र के माध्यम से हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम की शपथ (बैअत) लेने की पवित्रता प्राप्त की। कादियान के निकट स्थित गाँव लोधी नंगल के मस्जिद के इमाम नूर मुहम्मद साहब हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम की शपथ लेकर आए। उन्होंने वापस गाँव में आकर घोषणा की कि इमाम महदी आ गए हैं और सच्चे हैं उनको मान लो। इसके बाद पत्र के माध्यम से शपथ लेने वालों में मिर्ज़ा इल्मुद्दीन भी थे। फहीमुद्दीन नासिर साहब ने जून 1996 ई. में धार्मिक शिक्षा संस्थान (जामिया) उत्तीर्ण की। फिर उनकी पाकिस्तान में विभिन्न स्थानों पर नियुक्ति हुई और फिर उन्होंने कुरआन की व्याख्या (तफ्सीर) में विशेषज्ञता भी प्राप्त की। 2006 ई. में उन्हें रोमानिया भेजा गया और देहांत तक वह वहीं सेवा की पवित्रता प्राप्त करते रहे।

उनकी पत्नी नसीरा फहीम लिखती हैं कि एक आदर्श पति थे। मेरी भावनाओं और संवेदनाओं को मेरे कुछ कहे बिना ही जान लेते थे। बहुत ध्यान रखने वाले पिता थे। जीवन के उल्लेखनीय पहलुओं में अल्लाह तआला से दृढ़ संबंध, ईश्वर पर भरोसा (तवक्कुल), उपासना, प्रार्थना, धैर्य, साहस, बुद्धिमत्ता, सहनशीलता, धर्म की सेवा का उत्साह और जज्बा, अपने कर्तव्यों के पालन की भावना और निर्धारित समय पर प्रत्येक कार्य को पूरा करना शामिल है। खिलाफत से गहरा प्रेम और निष्ठा का संबंध था। हर व्यक्तिगत और सामुदायिक कार्य से पहले उस समय के खलीफा की सेवा में लिखते थे और मार्गदर्शन लेते थे और समुदाय के सदस्यों और अपने बच्चों की सदैव अपने व्यावहारिक उदाहरण से शिक्षा दी। समझाने का ढंग बहुत अच्छा था। समय पर नमाज़ों का पाठ, रात्रि की नमाज़ (तहज्जुद) और अतिरिक्त नमाज़ें (नवाफिल) पढ़ना आपका नियमित क्रम था। बीमारी की गंभीरता में भी नमाज़ों के पाठ की ओर ध्यान रहा और अंत में उन्हें कैंसर हो गया था तो जब बीमारी बहुत बढ़ गई और बोलना भी कठिन था तो संकेत से कहा कि नोटबुक लाओ और लिखा कि उपासना और अल्लाह तआला के सामने प्रार्थना हर कठिनाई और परेशानी में उसके द्वार पर झुकना है। अपनी पत्नी और बच्चों को शिक्षा दी कि जो कुछ भी हो जाए तुमने अल्लाह का द्वार नहीं छोड़ना है। सदैव समझाते थे कि बस अल्लाह से माँगना है। अल्लाह तआला के साथ ही जीवंत संबंध स्थापित करो। उसी से मित्रता करो वह तुम्हें कभी कठिनाई में अकेला नहीं छोड़ेगा। प्रचार और समुदाय का परिचय कराने का अवसर कभी हाथ से जाने नहीं देते थे। अपने साथ सामुदायिक परिचय पर साहित्य और पर्चे रखते थे। अस्पताल के डॉक्टरों के पास जाते तो उनको भी प्रचार करते थे और इस बात पर बहुत कृतज्ञता व्यक्त करते थे कि मैं डॉक्टरों को भी प्रचार करके आया हूँ। हर समय चेहरे पर रहने वाली मुस्कान थी। बहुत मिलनसार थे। आपके स्वभाव के कारण हर कोई आपका प्रशंसक हो जाता था। आपके देहांत का समाचार सुनकर मिशन हाउस के पास रहने वाले रोमानियाई पड़ोसियों ने रोते हुए अपनी भावनाएँ व्यक्त की, बहुत दुख प्रकट किया। बीमारी के दौरान भी अपने कर्तव्यों का निर्वहन निरंतर करते रहे यहाँ तक कि देहांत से दो दिन पहले जबकि स्वास्थ्य अत्यंत कमजोर था, साँस लेने में कठिनाई और खाना-पीना भी मुश्किल था, सामुदायिक पत्रों का उत्तर लिखते रहे और किसी जरूरी ई-मेल का उत्तर भी दिया। उनकी इच्छा यह थी कि रोमानिया में समुदाय मजबूत हो और देश की परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए उचित रणनीति के साथ इसके लिए प्रयत्नशील भी रहते थे। बच्चों से कहते थे कि तुम्हारा चरित्र और व्यवहार ऐसा होना चाहिए कि प्रचार का साधन बने। रोमानियाई भाषा में पवित्र कुरआन का अनुवाद पूरा करना चाहते थे। एक से डेढ़ पारे (कुरआन के खंड) का अनुवाद पूरा कर चुके थे किंतु दूसरे कार्यों के कारण अधिक कार्य नहीं हो सका। इसी प्रकार हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकों का भी अनुवाद कर रहे थे। विभिन्न क्षेत्रों से संबंध रखने वाले स्थानीय रोमानियाई व्यक्तियों के साथ जब भी आपकी मुलाकात होती तो वे रोमानियाई लोग यही कहा करते थे कि उनकी भाषा बहुत शिष्ट और साहित्यिक है जो सामान्यतः विश्वविद्यालय में पढ़ाने वाले प्रोफेसर बोलते हैं। वहाँ के स्थानीय लोग कहते थे कि हमने किसी गैर-रोमानियाई को इतनी अच्छी और उत्तम भाषा बोलते नहीं देखा। बहुत अच्छी भाषा थी उनकी।

उनकी माता सफिया बेगम कहती हैं कि मृतक के नाना और नानी दोनों हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम के सहयोगी (सहाबी) थे। प्रचारक साहिब उच्च चरित्र के स्वामी थे। हर कोई उनका उल्लेख कर रहा है। अच्छे व्यवहार और धैर्य और धार्मिक कार्यों के उत्साह से अल्लाह तआला ने उनको सम्मानित किया था। कहती हैं बहुत आज्ञाकारी पुत्र था। उनके पिता ने उनकी जन्म से पहले स्वप्न देखा था कि उन्होंने एक बच्चा उठाया हुआ है और उसे देख रहे हैं कि उसके माथे पर चंद्रमा और तारा बना हुआ है। फिर कहती हैं जब प्रचारक बना तब हमें समझ आई कि यदि अल्लाह तआला ने चाहा तो यह एक दिन अवश्य चमकेगा। 2006 ई. में यह रोमानिया गए थे। रोमानिया के पहले प्रचारक थे और भाषा भी उन्होंने सीखी और बहुत उत्तम भाषा सीखी और वहाँ से स्नातक (ग्रेजुएशन) की डिग्री उन्होंने पूरी की। समुदाय के लिए बड़ा कार्य किया। उन्होंने वहाँ समुदाय को पंजीकृत करवाया। मिशन हाउस स्थापित किया और उस समय तक आराम से नहीं बैठते थे जब तक दैनिक कार्य पूरा न कर लें।

उनके भाई रफीउद्दीन कहते हैं हाई स्कूल (मैट्रिक) के बाद स्वयं ही बिना किसी के कहे धार्मिक शिक्षा संस्थान (जामिया) में चले गए और समर्पण (वक़्फ़) को फिर बहुत उत्तम ढंग से निभाया और वास्तव में निभाया। छुट्टी भी नहीं लेते थे। कहते हैं अवकाश भी नहीं लेते थे सिवाय एक बार अवकाश लिया जब उनकी छोटी बहन का देहांत हुआ।

उनके पुत्र मिर्ज़ा लबीद कहते हैं कि जब मैंने मेडिकल कॉलेज में प्रवेश लिया तो कठिनाइयों का सामना करना पड़ा और मुझे चिंता थी कि यह शिक्षा पूरी भी कर पाऊँगा कि नहीं। मुझे प्रतिदिन फोन करके हिम्मत दिलाते। दुरूद शरीफ पढ़ने, रात्रि की नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ने, प्रार्थनाएँ करने की समझाइश देते। परिश्रम करने की समझाइश देते और इस प्रकार मुझे उन्होंने बहुत प्रोत्साहित किया।

उनके दूसरे पुत्र दानिश कहते हैं कि जो व्यक्ति भी एक बार उनसे मिला उनके देहांत का समाचार सुनकर रोने लगा और कहने लगा कि वह अत्यंत नेक और पवित्र आचरण वाले मनुष्य थे। अत्यधिक स्नेह करने वाले थे।

लातविया के प्रचारक लिखते हैं कि मृतक बड़े परिश्रमी, सदाचारी और खुशमिजाज थे। उनकी विनम्रता और सरलता हर मनुष्य को उनका प्रशंसक बना लेती। उनके स्वभाव में एक विशेष गर्मजोशी होती थी। चेहरे पर मुस्कान रहती थी। उनके देश रोमानिया में कुछ अन्य देशों के छात्र शिक्षा के उद्देश्य से निवास कर रहे थे, उन छात्रों से भी बहुत स्नेह और प्यार का व्यवहार करते थे।

तस्वीर जावेद मेडिकल कॉलेज के छात्र थे अब डॉक्टर बन गए हैं। कहते हैं छात्रों की आध्यात्मिक शिक्षा के लिए विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में जहाँ अहमदी छात्र पढ़ रहे होते थे रेल या बस पर कई-कई घंटे यात्रा करके आते थे। समुदाय के पैसे बचाने का उन्हें बहुत ध्यान रहता था यहाँ तक कि गत्तों से और विभिन्न वस्तुओं को एकत्र करके स्वयं ही डेस्क भी बना लिया था ताकि सामुदायिक धन बच जाए। गंभीर बीमारी में भी अंतिम क्षणों तक उन्होंने बड़ी कठिनाई के बावजूद नमाज़ों का प्रबंध किया। बहुत साधारण और विनम्र मनुष्य थे। हमें और बच्चों को भी उन्होंने शिष्टता और विनम्रता सिखाने का प्रयास किया।

रोमानिया से एक प्रिय रोमान शम्स हैं। कहते हैं परीक्षाएँ बहुत कठिन थीं, मुझे संदेह था कि उत्तीर्ण नहीं कर पाऊँगा तो प्रचारक साहिब मुझे आश्वासन देते थे कि आप चिंता न करो। परीक्षा से सप्ताह पहले मैं तुम्हें ऐसे बिंदु समझाऊँगा कि तुम यदि अल्लाह ने चाहा तो सफल हो जाओगे और उनका लाभ उनको हुआ।

अदील एड्रियन (Adrian) रोमानिया के एक नव-प्रकाशित (नव-मुबई) हैं, कहते हैं मैं उन्हें अस्पताल में लेकर आया तो उन्होंने अगले दिन एक सामुदायिक कार्य के संबंध में मेरी सहायता माँगी जिसके लिए निकटवर्ती शहर आना था। जब हम कार्य के लिए गए तो रास्ते में विभिन्न विषयों पर बात करते हुए एक अवसर पर कुछ मिनटों के लिए प्रचारक साहिब ने एक भावुक अवस्था में मुझसे कहा कि यदि अल्लाह न करे तो उन्हें कुछ हो जाए तो वह यहीं दफन होना चाहते हैं ताकि यह याद रहे कि वह यहाँ

रहे और उन्होंने यहाँ रहकर एक सकारात्मक परिवर्तन उत्पन्न किया। फिर लिखते हैं कि स्वास्थ्य के और खराब होने के बावजूद सदैव अपने लैपटॉप पर कार्य करके और स्वयं एक पत्र लिखकर अपने कार्य को जारी रखने का पूरा प्रयास करते। सदैव अल्लाह के धर्म और दूसरों के लिए अधिक चिंतित रहते थे। अपनी अंतिम साँस तक कभी एक क्षण के लिए भी अपने बारे में नहीं सोचा। फिर यह नव-प्रकाशित लिखते हैं कि मैंने प्रचारक साहिब को अपना समय और नींद दूसरों के लिए बलिदान करते हुए देखा। सदैव इस बात पर कृतज्ञ रहते कि उन्हें दूसरों की सेवा का अवसर मिल रहा है। कहते हैं मैंने कभी उनके मुख से किसी के बारे में मामूली सी भी बुरी बात नहीं सुनी। रो-रो कर न केवल अपने परिवारजनों के लिए बल्कि हमारी रोमानिया समुदाय के लिए और उसके सदस्यों के लिए भी प्रार्थनाएँ किया करते थे। कभी एक दिन की छुट्टी नहीं ली और न ही कभी अधिक आराम करना चाहा क्योंकि वह कहते थे कि यह उनका कर्तव्य है कि वह समुदाय की हर प्रकार से उत्तम क्षमताओं के साथ सेवा करें चाहे इसके लिए उन्हें अपनी नींद या स्वास्थ्य की कितनी ही बलिदान क्यों न देनी पड़े। सदैव अपना पूरा भरोसा अल्लाह तआला पर करते। दूसरों को भी अधिक से अधिक प्रार्थना करने और उसकी सहायता पर विश्वास करने की समझाइश देते और प्रोत्साहित करते। यह नव-प्रकाशित लिखते हैं कि मेरे लिए प्रचारक साहिब केवल प्रचारक ही नहीं थे बल्कि एक पिता की तरह थे। वह मेरे लिए असाधारण आध्यात्मिक मार्गदर्शक थे और एक बहुत अच्छे और घनिष्ठ मित्र थे।

ये हैं प्रचारक के गुण जो इस नव-प्रकाशित ने बताए हैं और यही शिक्षा और अपना उदाहरण है जो प्रचार और शिक्षा में सुविधाएँ उत्पन्न करता है और परिणाम उत्पन्न करता है। विदेश में धर्म के लिए बलिदान हुए, इस दृष्टि से उनका स्थान भी शहीद का स्थान ही है। अंतिम साँस तक अपनी वचनबद्धता को निभाया और अच्छी तरह निभाया। हमेशा मैंने भी देखा है उनके चेहरे पर मुस्कान ही रहती थी। मौलवी उबैदुल्लाह साहब जो मॉरीशस में कार्यक्षेत्र में देहांत हो गए थे, हज़रत मुस्लेह मौऊद रदियल्लाहु तआला अन्हु ने उनका उल्लेख करते हुए समुदाय को भी शिक्षा दी थी कि ऐसे लोग शहीद होते हैं और हमें मृतक से सबक लेना चाहिए। (उद्धृत: खुत्बाते महमूद भाग 8 पृष्ठ 263-264, शुक्रवार का उपदेश दिनांक 7 दिसंबर 1923 ई.)

निस्संदेह फहीम नासिर मृतक का भी ऐसा ही एक चरित्र था। और यह उदाहरण था जो एक सबक है और विशेष रूप से जीवन-समर्पित लोगों (वाक़िफ़ीने ज़िन्दगी) के लिए यह सबक है। अल्लाह तआला मृतक के स्तर ऊँचे फरमाए और उनकी पत्नी, बचों और माता को सबको धैर्य प्रदान करे।

दूसरा उल्लेख माननीय अब्दुल अलीम फारूकी साहब का है। अब्दुर्रशीद फारूकी साहब कनाडा के पुत्र थे। पिछले दिनों उनका देहांत हो गया। निस्संदेह हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं। मृतक संकल्पपत्र लिखने वाले थे। देहांत भी इस प्रकार हुआ कि तीन हथियारबंद व्यक्ति उनके घर में घुस गए। यह अपने कमरे में सो रहे थे। पत्नी और तीन बेटियाँ नीचे थीं। बेटा भी अपने कमरे में था। डाकुओं ने सबके फोन ले लिए। मृतक शोर सुनकर जाग गए। एक डाकू आपके कमरे में घुस गया। मृतक ने डाकू को डराना चाहा तो उस समय उसने आपके नाक और कंधे पर एक डंडे से प्रहार किया और भाग गया। उस समय मृतक अपने बेटे के कमरे की ओर जाने लगे तो एक डाकू जो सीढ़ियों के पास खड़ा था उसने आप पर दो गोलियाँ चलाईं। एक गोली मृतक के हृदय के निकट लगी और शरीर से निकल कर दूसरी ओर तक चली गई। स्थान पर ही आपका देहांत हो गया। निस्संदेह हम अल्लाह के हैं और उसी की ओर लौटने वाले हैं। आप हज़रत मसीहे मौऊद अलैहिस्सलाम के सहयोगी हज़रत मौलवी क़ुदरतुल्लाह साहब सनोरी रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत मौलवी मुहम्मद हुसैन साहब रज़ियल्लाहु अन्हु के संबंधी थे। समुदाय के सक्रिय सदस्य थे। पाँचों समय की नमाज़ और रात्रि की नमाज़ (तहज्जुद) में नियमित थे। पूर्ण-उत्साह से अल्लाह की ओर बुलाने वाले (दाइई इलल्लाह) थे। अपने क्षेत्र में स्थानीय सचिव प्रचार के रूप में सेवा करने का अवसर मिला। इस समय क्षेत्र के अध्यक्ष के रूप में सेवा कर रहे थे। पीछे रह जाने वालों में उनकी पत्नी के अलावा एक पुत्र और तीन पुत्रियाँ शामिल हैं। जकरिया खान साहब मिशनरी प्रभारी उनके संबंधी थे। वह लिखते हैं कि बड़े नेक स्वभाव और लोगों के लिए लाभदायक व्यक्तित्व थे। उनको उनकी पत्नी ने बताया कि रात्रि की नमाज़ (तहज्जुद) में नियमित थे। पाँचों समय की नमाज़ों को सुधार कर पढ़ते थे। पूर्ण-उत्साह से अल्लाह की ओर बुलाने वाले थे। अपनी व्यस्तताओं के बावजूद दिन-रात समुदाय के कार्यों में व्यस्त रहते। आर्थिक बलिदान में बढ़-चढ़ कर भाग लेते। खिलाफत के साथ गहरा निष्ठा का संबंध था।

उनकी पत्नी मरयम साहिबा लिखती हैं कि अच्छे पति थे। उनसे मैंने जीवन में बहुत कुछ सीखा। प्रचार करने का उनको बहुत शौक था और आश्चर्यजनक प्रचार का जज्बा था। सदैव नए-नए प्रचारी प्रकल्प सोचा करते थे और उनको व्यवहारिक रूप देने का प्रयास करते। खिलाफत से संबंध का भी उन्होंने लिखा है। पड़ोसियों के साथ मुहल्ले के लोगों के साथ बड़ा अच्छा व्यवहार था और सब उनके प्रशंसक थे। खुशमिजाज थे। दयालु थे। घर में सदैव सामूहिक नमाज़ पढ़ते। बच्चों को भी इसकी समझाइश करते। बेटी अज़ीज़ा उज़्मा कहती हैं कि छोटी-छोटी बातों से लेकर बड़ी-बड़ी आवश्यकताओं तक चिंतित रहते। सारा दिन अपना काम होता था या समुदाय के कार्यों में व्यस्त रहते तब भी रात को सोने के समय हमारे कमरे में आकर पूछते और हमारी देखभाल करते कि कैसा समय बीता? नमाज़ें आदि पढ़ीं कि नहीं? अपने बारे में भी बताते। तो एक मित्रवत वातावरण हमारे साथ था।

बेटे प्रिय काज़िम कहते हैं। हमारे लिए पिता आदर्श थे और कहते हैं मैं प्रयास करूँगा कि यदि अल्लाह ने चाहा तो उनके मार्ग पर चलूँ। प्रचार के लिए हम प्रतिदिन हर सप्ताह रविवार के दिन जाया करते थे। जहाँ भी अवसर मिलता प्रचारी स्टाल लगाते और मुझे उन्होंने क़ुरआन कंठस्थ (हिफ़्ज़) भी करवाया। शजर फारूकी साहब जो यहाँ हैं उनके यह भतीजे थे। उन्होंने भी यही लिखा है सारी अच्छाइयाँ बताई हैं। बड़े साफ दिल, नेक चरित्र, उच्च नैतिकता के स्वामी मनुष्य थे और उमरा (छोटा हज) भी उनको करने की पवित्रता दी तो वहाँ भी लोगों ने कहा कि हमने उनमें उपासना में रुचि और एकाग्रता ऐसी देखी है जो प्रशंसनीय है। बेटियों की शिक्षा की चिंता उनको रहती थी। पंद्रह वर्ष की बेटी थी तो मेरे से पूछा कि उसे फोन लेकर देना चाहिए कि नहीं और फिर जब मेरी सलाह उनको मिलीं तो उसके अनुसार उन्होंने उस पर अमल किया। हर चीज को बारीकी से देखने वाले थे। अनिवार्य चंदों के अलावा अन्य आर्थिक अभियानों में बहुत उदार हौसले से बढ़-चढ़ कर सेवा करते थे। पाकिस्तान में गरीबों की सेवा के लिए भी बड़ी रकम भेजा करते थे।

उनकी माता बयान करती हैं कि मेरा बच्चा समुदाय का निस्वार्थ सेवक, खिलाफत से स्नेहपूर्ण प्रेम रखता था। हर चीज में सच्चाई को महत्व देता था। हर छोटे-बड़े से प्रेम का व्यवहार करता था। प्रचार का बड़ा शौक था। हर रविवार को प्रचार के लिए जाता। रात्रि की नमाज़ (तहज्जुद) पढ़ने वाला और दूसरों की सहायता करने वाला था और कहती हैं सामूहिक नमाज़ का इतना शौक था कि कभी-कभी मुझे अपने काम से फोन करके कहता थ कि यदि आपने नमाज़ नहीं पढ़ी तो प्रतीक्षा करें मैं आ रहा हूँ हम साथ नमाज़ पढ़ेंगे। अल्लाह तआला उनसे क्षमा और दया का व्यवहार फरमाए। माता और पत्नी बचों को धैर्य प्रदान करे। उनकी संतान उनके नेक उदाहरण और उनकी इच्छाओं पर चलने वाली हो।

(अल्-फ़ज़्ल इंटरनेशनल 17 अक्टूबर 2025, पृष्ठ 2 से 6)

★ ★ ★

पर्दा न करने (बे-पर्दगी) का बढ़ता हुआ रुझान

हज़रत खलीफ़तुल मसीह सानीरज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं:

"जब दुल्हा आए और चाहे वह पराया ही क्यों न हो, मोहल्ले की औरतें उससे पर्दा करना आवश्यक नहीं समझतीं और कहती हैं इससे क्या पर्दा है और फिर केवल यही नहीं कि पर्दा नहीं करतीं बल्कि उससे मजाक और हँसी भी करती हैं। कुल मिलाकर बहुत सी इस प्रकार की बातें हैं कि विवाह के मामले में धार्मिक नियम (शरीअत) का उल्लंघन किया जाता है, हालाँकि यही ऐसा मामला है कि इसके संबंध में बहुत अधिक सावधानी के साथ धार्मिक नियमों का पालन करना चाहिए था।"

(खुत्बाते महमूद भाग तीसरा पृष्ठ 71)

हज़रत खलीफ़तुल मसीह राबे रहमहुल्लाह त्आला फ़रमाते हैं:

"जो बुराइयाँ मार्ग पकड़ रही हैं उनमें से एक पर्दा न करने का सामान्य रुझान भी है जो निश्चित रूप से धार्मिक नियमों (अहकामे शरीअत) की सीमाएँ लाँघने के निकट हो चुका है और विवाह वालों की इस मामले में उदासीनता को भी प्रकट करता है क्योंकि सम्मानित अतिथियों में बहुत सी लज्जाशील पर्दा करने वाली महिलाएँ होती हैं। बेधड़क अंतरंग (इंटर-सेंट) फोटोग्राफरों या गैर जिम्मेदार और गैर संबंधी पुरुषों को बुलाकर तस्वीरें खिंचवाना और यह परवाह न करना कि यह मामला केवल परिवार के निकट-तम घेरे तक ही सीमित है, इस बारे में स्पष्ट रूप से बार-बार समझाना चाहिए कि आपने यदि घर के भीतर कोई वीडियो आदि बनानी है तो पहले अतिथियों को सूचित कर दिया जाए और केवल सीमित पारिवारिक दायरे में ही शौक पूरे किए जाएँ।"

(दैनिक अल-फज़ल रबवा 26 जून 2002, पृष्ठ संख्या 4)

(विभाग: रिश्ता नाता नज़ारत इस्लाह इरशाद मर्कज़िया कादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष

अल्लाह तआला का संदेश पहुँचाने के लिए निकले थे जिनको बख़्त नस्र (नेबुकदनेज़्ज़र) बंदी बना कर ले आया था और जिसे उसने पूर्वी क्षेत्रों यानी अफगानिस्तान और कश्मीर में लाकर बसा दिया था।

अल्लाह तआला ने ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं कि फिलिस्तीन में उनके विरुद्ध विरोध की एक सामान्य लहर चल पड़ी। यहाँ तक कि सरकार की ओर से आप पर विद्रोह का मुकदमा दायर किया गया और इसके लिए फाँसी की सज़ा प्रस्तावित हुई किंतु जिस प्रकार अल्लाह तआला ने यूनुस अलैहिस्सलाम को मृत्यु के मुख से बचा लिया था, उसी प्रकार हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम को भी उसने सलीबी मृत्यु से बचा लिया और चूँकि इसके बाद वह अपने देश में नहीं रह सकते थे क्योंकि सरकार की ओर से जिसे फाँसी का आदेश मिल चुका हो वह यदि बच भी जाए तो दोबारा फाँसी के तख़्ते पर लटकाया जाता है। इसलिए उन्होंने इस देश को छोड़ दिया और इसके बावजूद कि फिलिस्तीन से अफगानिस्तान और कश्मीर तक का मार्ग बहुत भयानक था, फिर भी वह प्रवास करके इन देशों में आए और जैसा कि पवित्र कुरआन बताता है, अल्लाह तआला ने उनके लिए कश्मीर को प्रवास स्थल बनाया जो 'स्थिरता और जल के स्रोत वाली भूमि' का प्रतिनिधित्व करता था। अर्थात वहाँ उन्होंने बिना किसी विरोध के शांति और सुरक्षा के साथ निवास प्राप्त कर लिया। और फिर यह स्थान ऐसा था जहाँ न केवल स्वच्छ जल के झरने थे बल्कि यह क्षेत्र अपनी शीतलता और हरियाली में देश शाम के समान था जहाँ पहुँच कर उनकी सभी कठिनाइयाँ दूर हो गईं और वह एक सौ बीस वर्ष की आयु तक अल्लाह तआला का संदेश लोगों को पहुँचाते रहे और अंत में उन्होंने यहीं देहांत पाया और श्रीनगर के मोहल्ला खानयार में दफ़न हुए जहाँ आज तक उनकी कब्र पाई जाती है।

(तफ़्सीर कबीर भाग 6 पृष्ठ 177, मुद्रित कादियान 2010)

★ ★ ★

पृष्ठ 12 का शेष

कल मस्जिद में बहुत से पत्रकार, तकनीशियन और अनुवादक प्रवचन की तैयारी के लिए जो कि पूरी दुनिया में सुना और देखा जाएगा, मस्जिद में घूम रहे थे।

खलीफा ने जिस तरह इस्लाम को समझा है उस तरीके ने बहुत से पश्चिमी अधिकारियों के दिल जीत लिए हैं। दिसंबर 2012 ई. में आपको यूरोपीय संसद में आमंत्रित किया गया जहां आपने शांति स्थापना के विषय पर भाषण दिया। कुछ महीने पहले वाशिंगटन में आपकी शांति स्थापना के संबंध में प्रयासों की मान्यता में आपको कांग्रेस, डेमोक्रेटिक और रिपब्लिकन पार्टियों की ओर से श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

'इस्लाम के प्रति निष्ठा के कारण अहमदी लोग अल्लाह के नाम पर खून बहाने वाले हर आदमी के विरोधी हैं।'

28 मार्च 2013, गुरुवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बज कर 45 मिनट पर मस्जिद बैत-उर-रहमान, वालेंसिया में पधारकर नमाज़ फजर पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने निवास स्थान पर पहुंच गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कार्यालयीन डाक, रिपोर्ट्स और विभिन्न देशों से प्राप्त होने वाले फैक्स देखे और उन पर विभिन्न आदेश और निर्देश लिखे। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ दोपहर तक कार्यालयीन कार्यों की पूर्ति में व्यस्त रहे। दोपहर बाद भी कार्यालयीन कार्यों की पूर्ति में व्यस्तता रही।

कार्यक्रम के अनुसार पांच बज कर 35 मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान से बाहर पधारे और दस मिनट की यात्रा के बाद मस्जिद बैत-उर-रहमान पधारे जहां हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने ज़ुहर और असर की नमाज़ें एक साथ पढ़कर पढ़ाईं।

नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद से सटे बंगले का निरीक्षण किया और कुछ मामलों के बारे में निर्देश दिए।

व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने कार्यालय में पहुंच गए जहां कार्यक्रम के अनुसार परिवारों और व्यक्तिगत सदस्यों की मुलाकातें शुरू हुईं।

आज शाम के इस सत्र में 26 परिवारों के 119 व्यक्तियों और 23 सदस्यों ने व्यक्तिगत रूप से अपने प्यारे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। हर एक ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ तस्वीर खिंचवाने का सम्मान भी प्राप्त किया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेहवश शिक्षा प्राप्त कर रहे छात्रों और छात्राओं को कलम प्रदान की और छोटी उम्र के बच्चों और बच्चियों को चॉकलेट प्रदान की।

मुलाकात करने वाले ये परिवार बार्सिलोना, मैड्रिड, पेदरोआबाद और वालेंसिया से आए थे। बार्सिलोना से आने वाले परिवार 350 किलोमीटर, मैड्रिड से आने वाले 360 किलोमीटर और पेदरोआबाद से आने वाले 500 किलोमीटर का लंबा फासला तय करके पहुंचे थे।

फ्रांस, आयरलैंड और यूके से आने वाले सदस्यों ने भी मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया। आज चार नव-मुबईअ (नए सदस्य) परिवारों ने भी अपनी जिंदगी में पहली बार अपने प्यारे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाकात का सौभाग्य प्राप्त किया और अपने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से प्रार्थनाएं प्राप्त कीं।

मुलाकातों का यह कार्यक्रम पौने आठ बजे तक जारी रहा। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए मस्जिद के बाहरी प्रांगण में पहुंचे और मस्जिद के आसपास बसे इलाके को देखा और इस बारे में अमीर साहिब से बातचीत की।

आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने 'मस्जिद बैत-उर-रहमान' में नमाज़ मग़रिब और इशा एक साथ पढ़कर पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने ठहरने के स्थान पर पहुंच गए।

मस्जिद बैत-उर-रहमान के उद्घाटन के मौके पर विभिन्न देशों से जमाअत के सदस्यों और प्रतिनिधि मंडलों के आगमन का सिलसिला आज भी जारी रहा। आज फ्रांस, यूके, हॉलैंड, जर्मनी और पुर्तगाल से प्रतिनिधि मंडल और सदस्य व्यक्तिगत रूप से वालेंसिया (स्पेन) पहुंचे। कुछ सदस्य दो हज़ार किलोमीटर से अधिक की यात्रा तय करके पहुंचे।

स्पेन की धरती में मस्जिद बशारत के उद्घाटन के तीस साल बाद फिर खुशियों और आनंद का दिन आया है। वालेंसिया की धरती पर निर्मित होने वाली मस्जिद बैत-उर-रहमान रंग-बिरंगी रोशनियों से सजी बहुत सुंदर दिखाई देती है। दूर से इसका चमकता मीनार और गुंबद नजर आते हैं। अखबारों में इसके उद्घाटन की चर्चा है। स्थानीय निवासी अखबार में इस मस्जिद की तस्वीर देखकर और खबर पढ़कर इसे देखने आते हैं।

मस्जिद के आसपास दूर-दूर तक बस्तियां हैं और उनके पार विभिन्न दिशाओं में एक पहाड़ी श्रृंखला है। बहुत हरा-भरा और रमणीय इलाका है। यह मस्जिद ऊंचाई पर स्थित है, मस्जिद के आसपास बसे निवासी अपने घरों से मस्जिद के चमकते मीनार और गुंबद का नज़ारा करते हैं। इस चमकते मीनार से निकलने वाली आध्यात्मिक रोशनी एक दिन उनके दिलों को भी रोशन करेगी और फिर ये लोग एकेश्वर भगवान की उपासना के लिए अल्लाह के इस घर की ओर रुख करेंगे और अल्लाह का यह घर इंशा अल्लाहुल अज़ीज़ इस पूरे क्षेत्र की सही मार्गदर्शन का कारण बनेगा। अल्लाह करे कि जल्द ऐसा हो। आमीन।

29 मार्च 2013, शुक्रवार का पावन दिन

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बज कर 45 मिनट पर मस्जिद बैत-उर-रहमान, वालेंसिया में पधारकर नमाज़ फजर पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने ठहरने के स्थान पर पहुंच गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कार्यालयीन डाक और रिपोर्टें देखीं और उन पर निर्देश दिए और कार्यालयीन कार्यों की पूर्ति में व्यस्तता रही।

आज शुक्रवार का पावन दिन, मस्जिद बैत-उर-रहमान, वालेंसिया के औपचारिक उद्घाटन का दिन है और आज का यह दिन पूरी दुनिया के अहमदियों के लिए और विशेष रूप से उनके लिए जो आज इसके शुभ उद्घाटन में शामिल होने के लिए यहां पहुंचे हुए हैं, अत्यंत खुशियों का दिन है। आज इस पवित्र खुशी के मौके पर हर अहमदी का दिल अल्लाह तआला की प्रशंसा से भरा हुआ है।

कार्यक्रम के अनुसार दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की मस्जिद बैत-उर-रहमान पधारी हुई। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद की दीवार पर लगी पट्टिका का अनावरण किया। इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद के अंदर पहुंच गए और जुमे का प्रवचन दिया। शेष ..

★ ★ ★

अल्लाह तआला कौन है और क्या है? बिग बैंग से ब्रह्मांड की शुरुआत हुई और उस समय से ब्रह्मांड अपने आप चल रहा है तो क्या पूरा ब्रह्मांड ही अल्लाह है?

रूह की हकीकत और उसके जन्नत में सफर करने के बारे में मार्गदर्शन

रोज़े के दौरान दवाओं के इस्तेमाल के बारे में मार्गदर्शन

मस्जिद में प्लास्टिक की टोपियाँ रखने के बारे में मार्गदर्शन

क्या दौरान-ए-दर्स सुन्नतें अदा की जा सकती हैं?

अल्लाह तआला की ज़ात को किसने बनाया?

हमजिंसपरस्ती को कैसे गलत साबित किया जाए?

क्या मकरूह वक़्त में नमाज़-ए-जनाज़ा अदा की जा सकती है और क्या एक मस्जिद में दो जुमे हो सकते हैं?

नमाज़ में जह्र (ऊंची आवाज़ में) 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने के बारे में रहनुमाई।

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त 51-52)

नमाज़-ए-जनाजा के लिए कोई निषिद्ध समय नहीं हैं। विद्वानों में इस बारे में मतभेद पाया जाता है। नमाज़-ए-फज्र और नमाज़-ए-अस्र के बाद जिस तरह अतिरिक्त (नफली) नमाज़ अदा करने की मनाही है, नमाज़-ए-जनाजा की अदायगी के लिए ऐसी कोई मनाही नहीं है। हाँ, जब सूर्य उदय हो रहा हो, या सूर्य ठीक सिर के ऊपर हो, या सूर्य अस्त हो रहा हो, तो इन तीन समयों में हनफी, मालिकी और हनबली विद्वानों के निकट बिना किसी मजबूरी या कारण के नमाज़-ए-जनाजा अदा करना पसंदीदा नहीं है। जबकि शाफेई विद्वानों के निकट किसी भी समय नमाज़-ए-जनाजा अदा की जा सकती है।

शेष रहा एक मस्जिद में दो जुमा अदा करने के प्रश्न का, तो यदि मजबूरी हो तो जिस प्रकार सामूहिक प्रार्थना दोबारा हो सकती है, जैसा कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीस से सिद्ध है (सुनन तिरमिज़ी, किताब अल-सलाह, बाब मा जा फ़ील जमाअति फी मस्जिदिन कद सुल्लिया फ़ीहि मर्रतन), और हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने भी आवश्यकता के अनुसार दूसरी जमाअत (समूह) को वैध ठहराया है।

(अख़बार-ए-बद्र कादियान, खंड 6, अंक 1, 10 जनवरी 1907, पृष्ठ 18)

उसी प्रकार जुमा भी दोबारा हो सकता है। इसमें कोई हानि की बात नहीं है।

हाँ, इसके लिए यह सावधानी कर लेनी चाहिए कि जिस स्थान पर पहले नमाज़-ए-जुमा अदा की गई हो, वहाँ दोबारा जुमा न पढ़ा जाए, बल्कि मस्जिद के किसी अन्य भाग में ड्यूटी पर तैनात सदस्य अपने नए ख़ुत्बे (उपदेश) के साथ अलग जुमा पढ़ लें। इसकी उदाहरण हमें हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के पवित्र काल में मिलती है। अल-फ़ज़ल कादियान में 'मदीना-तुल-मसीह' के शीर्षक के नीचे लिखा है: "जुमे के दिन पुरुष और महिलाएं मस्जिद-ए-अक़्सा में चले जाते थे। जिससे कुछ दुष्ट लोगों को शरारत करने का अवसर मिल गया और एक-दो सज्जनों को आर्थिक नुकसान हुआ। इसलिए डॉक्टर खलीफा रशीदुद्दीन साहिब के प्रस्ताव को हज़रत मौलवी साहिब (हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो) ने स्वीकार कर लिया। वह यह था कि संतोष प्राप्त होने तक 'ताईफ़तुम मिनल मोमिनीन' (मोमिनीन का एक समूह) 12 बजे के बाद नमाज़-ए-जुमा समाप्त होने तक पहरा दे और फिर यह फिदाई (बलिदानी) मस्जिद मुबारक में जुमा पढ़ लें। चुनांचे, इस जुमा इस प्रस्ताव के अनुसार लाहौर के निष्ठावान और उत्साही युवक बाबू वज़ीर मोहम्मद साहिब और कुछ अफगानिस्तानी साथियों और मुंशी अकबर शाह खान साहिब ने अपने बीस-तीस लड़कों के साथ पहरा दिया और जब लोग मस्जिद-ए-अक़्सा से वापस लौटे तो अमीरुल मोमिनीन (हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो) के आदेश के अनुसार खान साहिब ने जुमा पढ़ाया।"

(अल-फ़ज़ल कादियान दारुल अमान, खंड 1, अंक 4, 9 जुलाई 1913, पृष्ठ 1)

अतः एक जुमआ होने के बाद दूसरा जुमा भी हो सकता है, लेकिन जैसा कि उपर्युक्त संदर्भ से सिद्ध है, ऐसा केवल आवश्यकता और मजबूरी की स्थिति में ही हो सकता है। साथ ही, इसके लिए स्थानीय प्रशासन की अनुमति भी आवश्यक है और तीसरी बात यह कि जिस मस्जिद में जुमा हो चुका हो, वहाँ दोबारा जुमा न पढ़ा जाए, बल्कि किसी अन्य स्थान पर पढ़ा जाए। लेकिन यदि दूसरी जगह का प्रबंध संभव न हो तो उसी मस्जिद में मेहराब के पीछे आंगन में या मस्जिद के किसी एक ओर दूसरा जुमा पढ़ लिया जाए।

प्रश्न: लंदन से एक मित्र ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रहिल अज़ीज़ की सेवा में लिखा कि जब 'बिस्मिल्लाह' सूरह फातिहा का अंग है, तो हम नमाज़ में 'अलहम्दु लिल्लाह' से पाठ क्यों शुरू करते हैं, 'बिस्मिल्लाह' से क्यों नहीं शुरू करते? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला ने अपने 07 जनवरी 2022 के पत्र में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर प्रदान किया। हज़ूर अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: हदीसों में यह बात बहुत स्पष्ट रूप से मौजूद है कि 'बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम' नियमित रूप से एक आयत है और पवित्र कुरआन की उन हर सूरत का अंग है जिसके आरंभ में यह अवतरित हुई है। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने सूरह फातिहा की व्याख्या में इस विषय को बहुत विस्तार के साथ बताया है।

शेष रहा नमाज़ में सूरह फातिहा या किसी अन्य सूरत से पहले 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने की बात का, तो नमाज़ की प्रत्येक रकअत में सूरह फातिहा या किसी भी अन्य सूरत से पहले हम 'बिस्मिल्लाह' पढ़ते हैं। हाँ, यह बात सही है कि इसे ऊँची आवाज़ से नहीं पढ़ा जाता बल्कि धीमी आवाज़ से पढ़ा जाता है। इसका कारण यह है कि हदीसों की प्रामाणिक पुस्तकों से ऐसा ही सिद्ध है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम नमाज़ों में 'बिस्मिल्लाह' को सूरह फातिहा और दूसरी सूरतों से पहले धीमी आवाज़ में ही पढ़ते थे। चुनांचे हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो से वर्णित है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम), हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो जब भी नमाज़ शुरू करते तो 'अलहम्दु लिल्लाहि रब्बिल आलमीन' से शुरू करते थे।

(सहीह बुखारी, किताब अल-अज़ान, बाब अल-अज़ान मा यकूल बअदत तकबीर)

इसी प्रकार एक अन्य परंपरा में हज़रत अनस रज़ियल्लाहु अन्हो बताते हैं कि मैंने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत उस्मान रज़ियल्लाहु अन्हो के पीछे नमाज़ें पढ़ी हैं। मैंने कभी भी उनसे ऊँची आवाज़ से (सूरत से पहले) 'बिस्मिल्लाह' नहीं सुनी।

(सुनन नसाई, किताब अल-इफ्तिताह, बाब तर्कुल जह्रि बि-स्मिल्लाह)

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का भी यही तरीका था कि 'बिस्मिल्लाह' जोर से नहीं पढ़ते थे। अहमदीयत के खोलफा ने भी इसी तरीके को जारी रखा और 'बिस्मिल्लाह' जोर से नहीं पढ़ी। समुदाय की एकता की माँग यही है कि सामूहिक नमाज़ में इमाम वही तरीका अपनाए जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम, हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) और आपके खोलफाओं से सिद्ध है।

हाँ, यह बात सही है कि यदि कोई नमाज़ में 'बिस्मिल्लाह' जोर से पढ़े तो हम उसे गलत नहीं समझते, क्योंकि कुछ हदीसों में आता है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इसे जोर से भी पढ़ा है। इसीलिए हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं: "'बिस्मिल्लाह' को जोर से और धीमे पढ़ना, दोनों ही तरीके वैध हैं। हमारे हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब (अल्लाह उन पर दया करे) जोशीली प्रकृति के थे। 'बिस्मिल्लाह' जोर से पढ़ा करते थे। हज़रत मिर्जा साहिब (अलैहिस्सलाम) जोर से नहीं पढ़ते थे। ऐसा ही मैं भी धीमे पढ़ता हूँ। सहाबा (पैगंबर के साथियों) में दोनों प्रकार के लोग हैं। मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि किसी तरह कोई पढ़े, उस पर झगड़ा न करो। ऐसा ही 'आमीन' का मामला है, दोनों तरीके वैध हैं। कुछ स्थानों पर यहूदियों और ईसाइयों को मुसलमानों का 'आमीन' पढ़ना बुरा लगता था तो सहाबा खूब ऊँची आवाज़ से पढ़ते थे। मुझे दोनों तरीके अच्छे लगते हैं, कोई ऊँचा पढ़े या धीमे पढ़े।"

(बद्र, अंक 32, खंड 11, 23 मई 1912, पृष्ठ 3)

हज़रत मौलवी अब्दुल करीम साहिब सियालकोटी रज़ियल्लाहु अन्हो एक उम्र बिताने के बाद अहमदी बने थे और अहमदीयत से पहले वे 'बिस्मिल्लाह' जोर से ही पढ़ा करते थे और चूंकि यह तरीका भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सिद्ध है, इसलिए हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) ने उन्हें इससे मना नहीं किया।

लेकिन जैसा कि हज़रत खलीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो के उपर्युक्त कथन से, साथ ही बहुत से अन्य वरिष्ठ साथियों, जिनमें हज़रत मियां अब्दुल्लाह साहिब सनोरी रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत मुफ़्ती मोहम्मद सादिक साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत काज़ी मोहम्मद यूसुफ साहिब पेशावरी रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत साहिबज़ादा मिर्जा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हो शामिल हैं, उनकी परंपराओं से सिद्ध होता है कि हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) का अपना व्यवहार वही था, जिसे उनके स्वामी एवं पालनहार हज़रत मोहम्मद मुस्तफा (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) ने अधिकतर अपनाया।

अतः अब हमें इस मामले में भी एकता कायम रखने के लिए उसी तरीके को अपनाना चाहिए, जिसे आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने अधिकतर अपनाया, और जिस तरीके पर इस्लाम के प्रथम उत्थान में स्थापित सच्ची इस्लामी खिलाफत के सिंहासन पर आसीन हुए खलीफाओं ने, तथा इस्लाम के द्वितीय उत्थान में धर्म के नवीनीकरण के लिए भेजे गए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के आध्यात्मिक पुत्र और सच्चे सेवक हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) और आपके द्वारा स्थापित सच्ची इस्लामी खिलाफत के प्रत्येक प्रतिध्वनि ने अपने-अपने समय में अमल किया।

इसी एकता को कायम रखने के लिए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने किसी के इस पूछने पर कि बुखारी और मुस्लिम के अलावा दूसरी किताबों में है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम 'बिस्मिल्लाह' जोर से पढ़ा करते थे, "यदि आप जोर से 'बिस्मिल्लाह' पढ़ने में कोई आपत्ति नहीं करते तो मैं जोर से पढ़ूँ, अन्यथा छोड़ दूँ?" तो हज़रत (मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो) ने फ़रमाया:

"बुखारी और मुस्लिम में आया है कि (उन्होंने) जोर से नहीं पढ़ी, तो क्या फिर ये दूसरी किताबें बुखारी-मुस्लिम से अधिक श्रेष्ठ हैं?"

(फरमूदात-ए-मुस्लेह मौऊद दारबरे-ए-फिक़्ही मसायल, पृष्ठ 56-57)

प्रश्न: भारत से एक महिला ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में लिखा कि अल्लाह तआला कौन है और क्या है? बिग बैंग से ब्रह्मांड की शुरुआत हुई और उस समय से ब्रह्मांड अपने आप चल रहा है तो क्या पूरा ब्रह्मांड ही अल्लाह है? कहा जाता है कि मरने के बाद हम अल्लाह तआला के पास चले जाते हैं, यह कैसे होता है? रूह की हकीकत क्या है और जब जन्नत और जहन्नम ब्रह्मांड के अलग-अलग हिस्से हैं तो क्या रूह उनके दरमियान सफर कर सकती है यानी एक जगह से दूसरी जगह मुंतकिल हो सकती है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 10 मार्च 2022 ई. में इन सवालों के दरज-ज़ैल जवाब अता फरमाए। हज़रत ने फ़रमाया:

उत्तर: इस्लामी तालीमात, जिन पर हमारा कामिल ईमान है उनके मुताबिक अल्लाह तआला की ज़ात वह हस्ती है जो इस कायनात के सारे निज़ाम को चला रही है। चुनांचे जब हम यह कहते हैं कि हर चीज़ को किसी न किसी ज़ात या हस्ती ने बनाया है और साइंस भी इस बात को मानती है कि कायनात की हर चीज़ अपने आप नहीं है बल्कि उसका कोई न कोई बनाने वाला ज़रूर है। साइंस उसे नेचर कहती है और हम अल्लाह तआला और उसके रसूलों की बताई हुई तालीमात के मुताबिक उस हस्ती को अल्लाह तआला की ज़ात मानते हैं।

बाकी अल्लाह तआला की ला-महदूद हस्ती इंसानी महदूद इल्म से बहुत बाला और बरतर है। उसके मुतअल्लिक हमारा ईमान वही है जो क़ुरआन-ए-करीम ने हमें अता फ़रमाया है कि कह दो कि वह अल्लाह एक है। अल्लाह बे-नियाज है। न उसने किसी को जना है और न वह जना गया है। और उसका कभी कोई हमसर नहीं हुआ। (सूरतुल इख़्लास)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम अल्लाह तआला की हस्ती के बारे में फ़रमाते हैं: "अल्लाह अपनी ज़ात और सिफात और जलाल में एक है कोई उसका शरीक नहीं। सब उसके मुहताज हैं। ज़र्रा ज़र्रा उससे जिंदगी पाता है। वह कुल चीजों के लिए मब्दा-ए-फैज़ है और आप किसी से फैज़याब नहीं। वह न किसी का बेटा है और न किसी का बाप और कैसे हो कि उसका कोई हम-ज़ात नहीं।" (इस्लामी उसूल की फ़लसफ़ी, रूहानी खज़ायन जिल्द 10 पृष्ठ 417) "तुम्हारा अल्लाह वह अल्लाह है जो अपनी ज़ात और सिफात में वाहिद है न कोई ज़ात उसकी ज़ात जैसी अज़ली और अबदी यानी अनादि और अकाल है न किसी चीज़ की सिफात उसकी सिफात की मानिंद हैं। इंसान का इल्म किसी मुअल्लिम का मुहताज है और फिर महदूद है मगर उसका इल्म किसी मुअल्लिम का मुहताज नहीं और बा-ऐन हमा गैर-महदूद है।"

(लैक्चर लाहौर, रूहानी खज़ायन जिल्द 20 पृष्ठ 154,155)

"याद रखो कि इंसान की हरगिज़ यह ताकत नहीं है कि उन सभी दकीक ब-दकीक अल्लाह के कामों को दरयाफ़्त कर सके बल्कि अल्लाह के काम अक्ल और फह्म और कयास से बरतर हैं। और इंसान को सिर्फ अपने इस कदर इल्म पर मगरूर नहीं होना चाहिए कि उसको किसी हद तक सिलसिला-ए-इलल-ओ-मअलूलात का मअलूम हो गया है क्योंकि इंसान का वह इल्म निहायत ही महदूद है जैसा कि समंदर के एक कतरे में से करोड़वाँ हिस्सा कतरे का। और हक बात यह है कि जैसा कि अल्लाह तआला खुद ना-पायदा-किनार है ऐसा ही उसके काम भी ना-पायदा-किनार हैं और उसके हर एक काम की असलियत तक पहुँचना इंसानी ताकत से बरतर और बुलंद तर है...हम ऐसे अल्लाह को नहीं मानते जिसकी कुदरतें सिर्फ हमारी अक्ल और कयास तक महदूद हैं और आगे कुछ नहीं बल्कि हम उस अल्लाह को मानते हैं जिसकी कुदरतें उसकी ज़ात की तरह गैर-महदूद और ना-पायदा-किनार और गैर-मुतनाही हैं।"

(चश्मा-ए-मारिफत, रूहानी खज़ायन जिल्द 23 पृष्ठ 280 से 282)

"फ़लसफ़ी जैसा कि मैंने पहले कहा है आसमान और ज़मीन को देख कर और दूसरे मसूआत की तरतीब-ए-बलाग़-ओ-मुहकम पर नज़र कर के सिर्फ इतना बताता है कि कोई साने होना चाहिए मगर मैं उससे बुलंद तर मकाम पर ले जाता हूँ और अपनी ज़ाती तजरबों की बिना पर कहता हूँ कि अल्लाह है।"

(मल्फ़ूज़ात जिल्द दूसरा पृष्ठ 357 मतबूआ 2016 ई.)

आपका दूसरा सवाल इंसान की मौत के बारे में है। तो मौत की हकीकत यह है कि पैदाइश के वक्त अल्लाह तआला इंसानी जिस्म में जो रूह डालता है, वफात के वक्त वह रूह इस फानी जिस्म को छोड़ देती है। और जिस्म उसी दुनिया में ही रह जाता है। चाहे वह इंसान पानी में डूब कर मरे, चाहे वफात के बाद उस जिस्म को ज़मीन में दफना दिया जाए या जला दिया जाए या दरिंदों परिंदों को खिला दिया जाए। और इंसानी रूह दूसरे आलम में जिसे आलम-ए-बरज़ख कहा जाता है चली जाती है, जहाँ उसे अपने दुनियवी अमल के मुताबिक नूर या तारीकी का एक नया जिस्म मिलता है।

सैयदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम रूह और जिस्म के इस तअल्लुक को बयान करते हुए फ़रमाते हैं: "जब यह ना-पाएदार तर्कीब-ए-इंसानी तफ़रीक-पज़ीर हो जाती है और रूह अलग और जिस्म अलग हो जाता है और जैसा कि देखा गया है जिस्म किसी गढ़े में डाल दिया जाता है और रूह भी एक किस्म के गढ़े में पड़ जाती है...हालाँकि मौत के बाद यह फानी जिस्म रूह से अलग हो जाता है मगर आलम-ए-बरज़ख में मुस्तआर तौर पर हर एक रूह को किसी कदर अपने अमल का मज़ा चखने के लिए जिस्म मिलता है। वह जिस्म उस जिस्म की किस्म में से नहीं होता बल्कि एक नूर से या एक तारीकी से जैसा कि अमल की सूरत हो जिस्म तैय्यार होता है। गोया कि उस आलम में इंसान की अमली हालतें जिस्म का काम देती हैं। ऐसा ही अल्लाह के कलाम में बार-बार जिक्र आया है और बाज जिस्म नूरानी और बाज ज़ल्मानी क़रार दिए हैं जो अमल की रोशनी या अमल की ज़ल्मत से तैय्यार होते हैं। अगरचे यह राज एक निहायत दकीक राज है मगर गैर-मअकूल नहीं...लेकिन जिन को आलम-ए-मकाशिफ़ात में से कुछ हिस्सा है वह इस किस्म के जिस्म को जो अमल से तैय्यार होता है तअज्जुब और इस्तिबआद की निगह से नहीं देखेंगे बल्कि इस मज़मून से लज़्ज़त उठाएँगे। गिरफ्त यह जिस्म जो अमल की कैफ़ियत से मिलता है यही आलम-ए-बरज़ख में नेक-ओ-बद की जज़ा का मूजिब हो जाता है।"

(इस्लामी उसूल की फ़लसफ़ी, रूहानी खज़ायन जिल्द 10 पृष्ठ 403 और 405)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस इक़्तिबास में रूह के एक किस्म के गढ़े में पड़ने का जो फ़रमाया है वह दरअस्ल सूरत अबस की उस आयत की तरफ इशारा है कि फिर उसने उसे मौत दी फिर उसे कब्र में रखा। (सूरत अबस:22)

अब ज़ाहिर है कि दुनिया में हर इंसान को मिट्टी के ढेर वाली कब्र मयस्सर नहीं आती क्योंकि करोड़ों मुर्दे जलाए जाते हैं और दफन नहीं किए जाते। लाखों इंसान डूब कर मरते हैं। हज़ारों इंसानों को जंगल के दरिंदे खा कर ख़त्म कर देते हैं। तो फिर हर इंसान के मुतअल्लिक यह कैसे कहा जा सकता है कि उसे अल्लाह कब्र में रखता है? यहाँ कब्र से मुराद वह रूहानी क़यामगाह है जहाँ मरने के बाद और कामिल हिसाब-किताब से पहले इंसान की रूह रखी जाती है।

बाकी किसी रूह का जन्नत और जहन्नम में एक जगह से दूसरी जगह जाने का जहाँ तक सवाल है तो इस बारे में पहली बात तो यह याद रखनी चाहिए कि रूह भी अल्लाह तआला ही के हुक्म के ताबे है, अपनी मर्ज़ी से कुछ नहीं कर सकती। चुनांचे यहूद ने रूह के बारे में जब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से सवाल किया तो अल्लाह तआला ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को फ़रमाया कह दो कि रूह मेरे रब के हुक्म से है। (सूरत बनी इसराईल:86)

दूसरा क़ुरआन-ए-करीम में उखरवी जिंदगी में मोमिनों और काफिरों के अमलनामों के लिए दो अलफाज सिज्जीन और इल्लिय्यीन आए हैं। इन अलफाज की तफ़्सीर करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो फ़रमाते हैं: सिज्जीन का लफ्ज जो कुफ्फार के लिए इस्तेमाल हुआ था मुफरद था मगर इल्लिय्यीन का लफ्ज जो मोमिनों के लिए इस्तेमाल हुआ है वह जमा का लफ्ज है। इस फर्क से उस तरफ इशारा किया गया है कि काफिर की सज़ा को अल्लाह तआला बढ़ाता नहीं मगर मोमिन के इनाम को बढ़ाता चला जाता है जिस की वजह से काफिर तो एक ही कैदखाने में पड़ा रहता है लेकिन मोमिन घर बदलता जाता है। एक घर के बाद उससे आला घर उसे मिलता है और उसके बाद उससे आला घर। इसी तरह अल्लाह तआला उसे कई दुनियाओं की सैर करा देता है इस लिए मोमिन के घर कई होंगे और काफिर का घर एक।

(तफ्सीर कबीर जिल्द 10 पृष्ठ 311, 312)

फिर क़ुरआन-ए-करीम में अहल-ए-जन्नत और अहल-ए-जहन्नम का जहाँ जिक्र किया गया है, वहाँ इन दोनों के दरमियान एक रोक के हाएल होने का भी जिक्र किया गया, जो इस बात का सबूत है कि जन्नती और जहन्नमी एक दूसरे से नहीं मिल सकेंगे। (सूरतुल आराफ:47)

लेकिन जहाँ तक मुख्तलिफ दरजात वाले जन्नतियों के आपस में मिलने-जुलने का मामला है तो कुरआन-ओ-हदीस में जन्नत के मुख्तलिफ मकाम और मदारिज का तो जिक्र हुआ है लेकिन जन्नत के इन मुख्तलिफ मकाम और मदारिज में रहने वालों के आपस में मिलने-जुलने में किसी रोक-टोक का कोई जिक्र नहीं आया। बल्कि उसके बर-अक्स अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है कि जो लोग ईमान लाए और उन की औलाद भी ईमान के मामले में उनके पीछे चली है हम आला जन्नतों में उनकी औलाद को भी उनके साथ जमा कर देंगे और उनके बाप-दादा के अमलों में भी कोई कमी नहीं करेंगे। (सूरतुत-तूर:22)

पस क़ुरआन-ए-करीम के इन मज़ामीन से यह बात साबित होती है कि नेक रूहें अल्लाह तआला के इज़्न से एक जगह से दूसरी जगह जा सकेंगी और एक दूसरे से मील-मुलाकात कर सकेंगी। लेकिन बद रूहें जो जहन्नम में अपनी सज़ा भुगत रही होंगी वह अपनी सज़ा पूरी होने तक उसी कैदखाने में मक़य्यद रहेंगी और जब उनकी सज़ा पूरी हो जाएगी तो अल्लाह तआला की रहमत की बदौलत वह भी जन्नत में चली जाएँगी।

प्रश्न: यूके से एक डॉक्टर साहिबा ने हार्मोन पैच, कॉन्ट्रासेप्टिव इम्प्लांट, हार्मोन डिपो इंजेक्शन, पेन किलर जेल, डीप फ्रीज़, डीप हीट जैसे तरीक़ा-ए-इलाज के रोज़े की हालत में इख्तियार करने के बारे में हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से इस्तिफ्सार किया। हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 21 मार्च 2022 ई. में इस बारे में दरज-ज़ैल हिदायात फ़रमाईं। हज़रत अनवर ने फ़रमाया:

उत्तर: रोज़े की हालत में किसी भी तरीक़ा-ए-इलाज के इस्तेमाल के सिलसिले में कुछ उसूली बातें याद रखना बहुत ज़रूरी है। सबसे पहली बात तो यह है कि अल्लाह तआला ने मरीज़ और मुसाफिर के मुतअल्लिक हुक्म दिया है कि वह बीमारी या सफर की हालत में रोज़ा न रखें और मर्ज दूर होने और सफर खत्म होने पर ही उन रोज़ों की तकमील करें। और जो शख्स किसी दाइमी मर्ज में मुब्तला हो और उसे कभी भी अपने तंदुरुस्त होने की उमीद न हो तो ऐसी सूरत में अगर वह ताकत रखता है तो फिद्या दे दे। (सूरतुल बकरह:185)

लेकिन अगर किसी शख्स को कोई ऐसी तकलीफ हो जिस में डॉक्टरों के नज़दीक रोज़ा रखना उस इंसान की सेहत के लिए नुकसानदेह नहीं तो वह शख्स उस बीमारी में रोज़ा रख सकता है।

ऐसी बीमारी में अगर किसी किस्म की दवा के इस्तेमाल की ज़रूरत हो तो वह दवा सिर्फ रोज़ा रखने से पहले या रोज़ा खोलने के बाद ही इस्तेमाल की जा सकती है। रोज़े के दौरान ऐसी कोई भी दवा इस्तेमाल नहीं की जा सकती जो जिस्म के अंदर जाती हो। अलबत्ता अगर उस दवा का असर सिर्फ जिल्द पर हो और उस दवा का कोई हिस्सा जिस्म के अंदर दाखिल न हो तो रोज़े की हालत में ऐसी दवा के इस्तेमाल में कोई हरज की बात नहीं। मिसालन किसी तेल, क्रीम, जेल या स्प्रे वगैरह की जिल्द पर मालिश या स्प्रे करना।

ऐसी दवा जिसे आपरेशन या इंजेक्शन के ज़रिए जिस्म के अंदर रखा या डाला जाता है और वह दवा जिस्म के अंदर आहिस्ता-आहिस्ता रिलीज़ होती रहती है तो ऐसी दवा भी आम दवाओं या खाने-पीने की अश्या की मानिंद रोज़ा रखने से पहले या रोज़ा खोलने के बाद ही जिस्म में इंजेक्ट की जा सकती है, रोज़े के दौरान उसे जिस्म में इंजेक्ट करना जाइज़ नहीं।

प्रश्न: नारोवाल पाकिस्तान से एक मुअल्लिम साहिब ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में लिखा कि प्लास्टिक वगैरह की टोपियाँ मसाजिद में रखना और उन्हें पहन कर नमाज़ पढ़ना बिदअत और नापसंदीदा अमल है या नहीं? इस के अलावा नमाज़-ए-फज्र के फौरन बाद जबकि दर्स-ए-कुरआन हो रहा हो फज्र की सुन्नतें पढ़ना दुरुस्त है? हालाँकि अल्लाह तआला क़ुरआन-ए-करीम में फ़रमाता है कि जब क़ुरआन-ए-करीम पढ़ा जा रहा हो तो उसे तवज्जो और खामोशी से सुनना चाहिए? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने मकतूब तिथि 28 मार्च 2022 ई. में इस सवाल का दरज-ज़ैल जवाब अता फ़रमाया: उत्तर: मसाजिद में हस्ब-ए-तौफीक मुनासिब और साफ-सुथरा लिबास पहन कर जाना चाहिए। क्योंकि अल्लाह तआला ने मसाजिद में ज़ीनत के सामान इख्तियार करने का हुक्म दिया है। (सूरतुल आराफ:32) इस हुक्म में दिलों की रूहानी सफाई के साथ-साथ कपड़ों और बदन की ज़ाहिरी सफाई भी शामिल है। इस लिए जहाँ तक मुमकिन हो मसाजिद में जाते वक्त मुनासिब लिबास जेब-ए-तन करना चाहिए और मुनासिब लिबास में सिर को ढाँपना भी शामिल है। इस्लाम के हर दौर में बुजुर्गान-ए-उम्मत का इमामा, पगड़ी या टोपी के साथ सिर ढाँपना उनकी आम आदत रही है। अहादीस में भी मुख्तलिफ सहाबा से मर्वी है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम इमामे का इस्तेमाल फ़रमाया करते थे। चुनांचे हज़रत जाबिर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूले करीम आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम फतह-ए-मक्का के दिन मक्का में दाखिल हुए तो आप के सिर मुबारक पर सियाह इमामा था। इसी तरह हज़रत अम्र बिन हुरैस रज़ियल्लाहु अन्हो रिवायत करते हैं कि रसूलुल्लाह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने लोगों से खिताब फ़रमाया और आप के सिर मुबारक पर सियाह इमामा था।

(सहीह मुस्लिम किताबुल हज्ज बाब जवाज दुखूलि मक्कता बिग़ैरि इहराम)

पस मस्जिद में प्लास्टिक या कपड़े वगैरह की कुछ साफ-सुथरी टोपियाँ इस लिए रखना कि अगर कोई नमाज़ी अपनी मर्ज़ी से उन्हें इस्तेमाल करना चाहे तो कर ले तो ऐसा करने में बिज़ाहिर कोई हरज की बात नहीं, बल्कि एक अच्छी बात की तरफ तरग़ीब की कोशिश है। बाज लोगों की ख्वाहिश होती है कि वह नंगे सिर नमाज़ न पढ़ें, उन्हें अगर मस्जिद में इस तरह टोपियों की सहूलियत मिल जाए तो वह खुशी से उसे पहन कर नमाज़ पढ़ना पसंद करते हैं। लेकिन इस के साथ यह बात भी ज़रूरी है कि जबरदस्ती किसी को मजबूर नहीं किया जाना चाहिए कि वह ज़रूर यह टोपी पहन कर नमाज़ पढ़े।

इस लिए अगर कोई अपनी मर्ज़ी और खुशी से मस्जिद में पड़ी यह टोपियाँ पहनना चाहे तो उसे रोकना नहीं चाहिए और अगर कोई न पहनना चाहे तो उसे मजबूर नहीं करना चाहिए।

बाकी जहाँ तक आप के दूसरे सवाल का तअल्लुक है तो दर्स के दौरान सुन्नतें पढ़ने में कोई मुनाहियत नहीं है। अहादीस में आता है कि मसाजिद अल्लाह तआला के ज़िक्र, नमाज़ पढ़ने और क़ुरआन-ए-करीम की तिलावत करने के लिए हैं। (सहीह मुस्लिम किताबुत-तहारह बाब वुजूबि ग़स्लिल बौली व ग़ैरिही मिनन्नजासाति इज़ा हसलत फिल मसजिद)

पस मसाजिद में यह तमाम काम एक वक्त में भी हो सकते हैं इस तरह कि कोई शख्स नवाफिल अदा कर रहा हो, कुछ लोग तिलावत कर रहे हों और कुछ लोग ज़िक्र-ए-इलाही कर रहे हों। लेकिन ऐसी सूरत में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने नसीहत फरमाई कि मस्जिद में मौजूद लोग एक दूसरे का ख्याल रखें और एक दूसरे से बढ़ कर औंची आवाज में तिलावत न करें।

(मुवत्ता इमाम मालिक किताबुन निदा लिस्सलाह बाबुल अमलि फिल क़िराअत)

इलावा अज़ीन अहादीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की यह सुन्नत भी बयान हुई है कि नमाज़ का सलाम फेरने के बाद आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उमूमन अपना चेहरा-ए-मुबारक सहाबा की तरफ कर लिया करते थे। इस मौक़ पर बाज़ अकवात आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम सहाबा को कोई नसीहत भी फ़रमाते। नमाज़-ए-फज्र के बाद आप आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम लोगों से यह भी फ़रमाते कि अगर किसी ने गुज़िश्ता रात कोई ख्वाब देखा हो तो वह उसे बयान करे। (सहीह बुखारी किताबुल अज़ान बाब यस्तक़बिलुल इमामुन नास इज़ा सल्लम, किताबुल जनाइज़ बाब मा क़ीला फी औलादिल मुश्रिकीन।

(सुनन इब्न-ए-माजा अल-मुकद्दमह बाब इत्तिबाए सुन्नतिल खुलफाइर राशिदीनल महदिय्यीन)

फिर हदीस में आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का यह इर्शाद भी मौजूद है कि तुम में से जुमे के दिन जो कोई ऐसे वक्त में मस्जिद आए जबकि इमाम खुत्बा दे रहा हो तो उसे चाहिए कि पहले दो रकअत इख्तिसार के साथ अदा करे और फिर खुत्बा सुनने के लिए बैठ जाए।

(मुस्लिम किताबुल जुमुआ बाबुत्-तहिय्यति वल इमाम यख्तुब)

इन तमाम अहादीस से पता चलता है कि किसी शख्स के सुन्नतें पढ़ने के वक्त अगर इमाम दर्स शुरू कर दे तो उसमें कोई हरज नहीं। क्योंकि अगर यह दुरुस्त न होता तो आनआँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम जुमे के लिए देर से आने वाले शख्स को यह हुक्म न देते कि तुम खुत्बे के दौरान दो रकअत नमाज़ पढ़ लो। इसी तरह दर्स के दौरान अगर कोई शख्स सुन्नतें अदा करता है तो यह भी काबिल-ए-इतिराज बात नहीं क्योंकि नमाज़ के फौरन बाद सुन्नतें पढ़ना ज़रूरी है, दर्स सुनना ज़रूरी नहीं। ख़ास तौर पर नमाज़-ए-फज्र के बाद जबकि वक्त कम हो और सूरज निकलने का अंदेशा हो तो फौरी तौर पर सुन्नतें अदा करनी चाहिए।

बाकी जहाँ तक इस मामले का इंतिज़ामी पहलू है तो मेरे नज़दीक अगर दर्स ऐसी नमाज़ के साथ हो जिस के बाद भी सुन्नतों की अदायगी मसनून हो जैसे नमाज़-ए-ज़ुहर, मग़रिब या इशा तो फिर सुन्नतों की अदायगी के बाद दर्स देना चाहिए लेकिन अगर नमाज़ के बाद सुन्नतें न हों तो फिर नमाज़ के मुआ बाद दर्स शुरू किया जा सकता है। इस सूरत में अगर कोई शख्स नमाज़-ए-फज्र की पहले की दो सुन्नतें फर्ज नमाज़ के बाद अदा करता है तो वह दर्स के दौरान भी उन सुन्नतों की अदायगी कर सकता है।

★ ★ ★

हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की बरकतों की हामिल ऐतिहासिक स्पेन 2013 की यात्रा

(भाग -2)

मस्जिद बशारत, पेद्रोआबाद के निर्माण के लगभग 32 वर्ष बाद, वालेंसिया (Valencia) स्थान पर एकेश्वर भगवान की उपासना के लिए निर्मित की जाने वाली अहमदिया मुस्लिम जमाअत की दूसरी मस्जिद 'मस्जिद बैत-उर-रहमान' के उद्घाटन और स्पेन के लोगों को इस्लाम के सुंदर और शांतिपूर्ण सिद्धांतों का संदेश देने के लिए, हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यद-हुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का तीसरा धन्य और धर्मयात्रा का दौरा। वालेंसिया में शुभ आगमन। व्यक्तिगत और पारिवारिक मुलाकातें। जुमे के प्रवचन और जुमे की नमाज़ के साथ उद्घाटन।

(वालेंसिया (स्पेन) में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की गतिविधियों की संक्षिप्त रिपोर्ट)

मार्च 2013, बुधवार

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह पांच बज कर 45 मिनट पर मस्जिद बैत-उर-रहमान, वालेंसिया में पधारकर नमाज़ फजर पढ़ाई। नमाज़ की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने ठहरने के स्थान पर पहुंच गए।

सुबह हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने कार्यालयीन डाक, पत्र और रिपोर्टें देखीं और निर्देश दिए। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न प्रकार के कार्यालयीन कार्यों की पूर्ति में व्यस्त रहे।

एक बज कर पचास मिनट पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रि-हिल अज़ीज़ अपने ठहरने के स्थान से मस्जिद बैत-उर-रहमान के लिए रवाना हुए। जहां दो बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने नमाज़ ज़ुहर और असर एक साथ पढ़कर पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ स्नेहवश सदस्यों के बीच रौनक बढ़ाते हुए पहुंचे और बातचीत की। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अमीर साहिब स्पेन से विभिन्न जमाअतों और शहरों से आने वाले सदस्यों के कार्यक्रम के बारे में पूछा जिस पर अमीर साहिब ने बताया कि शुक्रवार के दिन से यहां से लौटना शुरू हो रहा है इसलिए गुरुवार की शाम तक सदस्यों की एक बड़ी संख्या यहां वालेंसिया पहुंच जाएगी। पेद्रोआबाद से भी सदस्य आ रहे हैं और दूसरी जमाअतों से भी आ रहे हैं।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने वास्तुकार महबू-बुर्रहमान साहिब और अमीर साहिब स्पेन से मस्जिद के गुंबद और मीनार की ऊंचाई के संबंध में बातचीत की और इस बारे में कुछ निर्देश दिए कि नगर परिषद से बात करके मीनार की ऊंचाई को और बढ़ाया जाए और उसकी ऊंचाई कम से कम गुंबद के बराबर हो जाए।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने स्नेहवश वालेंसिया शहर और इस क्षेत्र में मुसलमानों के पुराने इतिहास के संबंध में डॉक्टर अता इलाही मंसूर साहिब, अध्यक्ष जमाअत वालेंसिया से बातचीत की और विभिन्न मामलों के बारे में पूछा।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने डॉक्टर साहिब से आखिरी बार मुसलमानों के इस क्षेत्र से निकाले जाने के बारे में पूछा जिस पर उक्त डॉक्टर साहिब ने बताया कि वालेंसिया के क्षेत्र से ही आखिरी बार मुसलमान निकाले गए हैं और मुसलमानों के रहने के हिस्से घरों और खंडहरों के रूप में मौजूद हैं।

इसके बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ यहां से रवाना होकर वापस अपने ठहरने के स्थान पर पहुंच गए।

दोपहर बाद भी हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न कार्यालयीन कार्यों की पूर्ति में व्यस्त रहे। सवा छह बजे हुज़ूर अनवर अय्य-दहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपने निवास स्थान से बाहर पधारे और उस क्षेत्र में आधे घंटे की पैदल सैर की। वालेंसिया शहर का यह उपनगरीय क्षेत्र सुंदर हरा-भरा इलाका है और एक पर्यटन स्थल है।

आठ बजे हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैत-उर-रहमान पधारकर नमाज़ मग़रिब और इशा एक साथ पढ़कर पढ़ाईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ वापस अपने ठहरने के स्थान पर पहुंच गए।

स्पेन की धरती पर स्थान के लिहाज से वालेंसिया के क्षेत्र में अहमदिया मुस्लिम जमाअत की दूसरी मस्जिद, मस्जिद बैत-उर-रहमान का निर्माण निश्चित रूप से अल्लाह तआला का ही चयन है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने जनवरी 2005 ई. में स्पेन का दौरा किया था। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने इस दौरे के दौरान 14 जनवरी 2005 ई. को मस्जिद बशारत, स्पेन में जुमे का प्रवचन देते हुए स्पेन में दूसरी मस्जिद के निर्माण के संबंध में कहा था: 'मेरे मन में बहुत प्रबलता से यह विचार आया कि पांच सौ साल बाद इस देश में आजादी मिलते ही अहमदिया मुस्लिम जमाअत ने मस्जिद बनाई और अब उसे भी लगभग पच्चीस साल होने लगे हैं। अब समय है कि स्पेन में मसीह मुहम्मदी (उन पर अल्लाह की दया और शांति हो) के मानने वालों की मस्जिदों के चमकते मीनार और स्थानों पर भी नजर आएं। तो इसके लिए मेरा चयन जो मैंने सोचा और जांच की तो वालेंसिया शहर की ओर ध्यान गया।'

अल्लाह तआला की विशेष दैवीय योजना के तहत हुज़ूर अनवर अय्यदहु-ल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का ध्यान वालेंसिया के क्षेत्र की ओर खींचा गया। क्योंकि यही वह क्षेत्र है जहां से सबसे अंत में मुसलमान स्पेन से निकाले गए और इस प्रकार स्पेन की धरती से मुसलमानों का नाम मिट गया और देश स्पेन सौ प्रतिशत ईसाई धर्म की गोद में चला गया।

अल्लाह तआला की दैवीय योजना ने यह चाहा कि जिस धरती पर, जिस क्षेत्र में मुसलमानों ने अपनी आखिरी सांसें लीं और फिर हमेशा के लिए विदा हो गए। आज उसी जगह पर, उसी क्षेत्र में भी इस्लाम का सूर्य पूरी चमक के साथ दोबारा उदय हो और यह संदेश हो कि जहां से हम पराजित होकर आहें और सिसकियों के साथ अपनी इस मातृभूमि को छोड़ा था आज उसी जगह पर हमने अल्लाह की प्रशंसा के गीत गाते हुए विजयी होने के लिए अपने कदम रख दिए हैं। स्पेन की विभिन्न रियासतों और शहरों में समय के साथ-साथ जहां-जहां ईसाई धर्म का कब्जा होता गया और मुसलमानों की तलवारें उनका साथ न दे सकीं वहां से मुसलमान वे इलाके खाली करते गए और इस प्रकार स्पेन की धरती ईसाई धर्म के कब्जे में आती गई और फिर अंततः वालेंसिया का स्थान आ गया जहां बसे मुसलमानों की तलवारें भी पूरी तरह कुंद हो गईं और रक्षा की कोई शक्ति न रही और इस प्रकार उन्हें जबरदस्ती स्पेन के इस आखिरी टुकड़े जमीन से भी निकाल दिया गया।

मसीह-ए-मौऊद (उन पर अल्लाह की दया हो) ने मार्च 1946 ई. में कहा था: 'हम निश्चित रूप से एक बार फिर स्पेन को लेंगे। हमारी तलवारें जिस स्थान पर जाकर कुंद हो गईं वहां से हमारी जुबानों का हमला शुरू होगा और इस्लाम के सुंदर सिद्धांतों को प्रस्तुत करके हम अपने भाइयों को स्वयं अपना अंग बना लेंगे।'

इसलिए वालेंसिया का वह स्थान जहां पहुंचकर मुसलमानों की तलवारें 'कुंद' हो गईं। आज अल्लाह तआला के अनुग्रह से उसी क्षेत्र में मस्जिद बैत-उर-रहमान के निर्माण से इस्लाम की सच्ची और वास्तविक शिक्षा के साथ जुबानों का हमला शुरू हुआ है और अहमदिया मुस्लिम जमाअत इस्लाम के सुंदर सिद्धांत प्रस्तुत करके अपने बिछड़े हुए भाइयों को अपना अंग बना लेगी। इंशा अल्लाहुल अज़ीज़ निश्चित रूप से ऐसा होगा क्योंकि यही दैवीय योजना है।

वालेंसिया (Valencia) स्पेन का तीसरा बड़ा शहर है और आठ लाख नौ हज़ार की आबादी को अपने में समेटे हुए है। इसका बंदरगाह यूरोप के व्यस्ततम बंदरगाहों में से है। यह स्पेन का बहुत पुराना शहर है। 138 ईसा पूर्व में रोमनों ने इसे

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e -mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 10 Thursday 06 November 2025 Issue No. 45

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e -mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

बसाया। रोमनों के बाद इसे विभिन्न जातियों जैसे Suevi, Vandlas और Visigoths ने अपना ठिकाना बनाया।

714 ई. में इस शहर को अब्दुर्रहमान प्रथम, वाली कुरतुबा ने जीता और इसका नाम मुसलमानों ने 'मदीना-उत-तुराब' रखा यानी (उपजाऊ) मिट्टी का शहर। मुसलमानों ने यहां कृषि, व्यापार और विज्ञान को बढ़ावा दिया और जिस दौर में पश्चिम अंधकार में डूबा हुआ था उस समय यहां से ज्ञान और कला के महान और आश्चर्यजनक कार्य संपन्न हुए। अल्-मंसूर की मृत्यु के बाद जब अंदलुस सामंतवाद का शिकार हुआ तो वालेंसिया भी बाकी अंदलुस की तरह एक छोटी सी रियासत में बदल गया। आज भी मुसलमानों के महान दौर के चिन्ह जगह-जगह नजर आते हैं जिनमें विभिन्न किले और बस्तियों के अवशेष हैं।

1238 ई. में विभिन्न ईसाई सेनाओं ने मिलकर वालेंसिया पर आक्रमण किया और उसे कुछ ही दिनों में अपने अधीन कर लिया। उस समय यहां बसे मुसलमानों की संख्या एक लाख 20 हज़ार थी। जिनमें से पचास हज़ार को जबरदस्ती इस क्षेत्र से बल्कि इस देश से निकाल दिया गया। और इस अवसर पर अरब कवियों ने बड़े दर्दनाक शोक गीत लिखे जिनसे आज भी इस्लामी इतिहास लहूलुहान है।

22 सितंबर 1609 ई. को तत्कालीन ईसाई बादशाह ने वालेंसिया के क्षेत्र में जो मुसलमान बचे रह गए थे उन्हें भी निकल जाने का आदेश दे दिया और अफ्रीका के विभिन्न देशों में मुसलमानों को भेज दिया गया और इस प्रकार स्पेन में मुसलमानों की शान और प्रतिष्ठा पतनोन्मुख होकर अपने अंत को पहुंची।

लेकिन अब अल्लाह तआला के अनुग्रह से मस्जिद बैत-उर-रहमान के निर्माण से इस्लाम के प्रकाश की किरणें पूरे वालेंसिया को रोशन करेंगी। इस्लाम का सूर्य पूरी चमक के साथ उदय होगा। और इस मस्जिद के मीनार से दिन में पांच बार 'अल्लाहु अकबर' की पुकार इस क्षेत्र में गूंजेगी। और यह पुकार अब ऐसी आध्यात्मिक तलवारों के साथ विजयी आएगी जो कभी भी कुंद नहीं होंगी, न कभी टूटेंगी और न पराजित होंगी। हां, अपने बिछड़े हुए भाइयों को निश्चित रूप से पराजित करेंगी और उनके दिल जीतेंगी क्योंकि अल्लाह तआला ने यह घोषणा कर रखी है कि 'कतबल्लाहु ला अग्लिबन्ना अन्ना व रसुली' (अल्लाह ने लिख दिया है कि निश्चय ही मैं और मेरे रसूल ही विजयी होंगे)।

मस्जिद बैत-उर-रहमान से संबंधित अखबारों में खबरें

आज भी प्रिंट मीडिया में मस्जिद के संबंध में खबरें और लेख प्रकाशित हुए।

बालेंसिया के अखबार रोज़नामा Las Provincias ने अपने 27 मार्च 2013 ई. के अंक में मस्जिद के उद्घाटन के संबंध में खबर दी और इसके आंतरिक हिस्से की तस्वीर छापी।

'नई इस्लामी प्रार्थनास्थल के गुंबद के नीचे निर्मित मस्जिद के हॉल में काम करते हुए मजदूर व्यस्त हैं।'

'प्रांत बालेंसिया की सबसे बड़ी मस्जिद का उद्घाटन शुक्रवार के दिन हो रहा है।'

'नगरपालिका समिति और अहमदिया जमाअत के प्रमुख लोगों ने मिलकर मस्जिद के पड़ोसियों की यातायात और सुरक्षा से संबंधित संभावित चिंताओं को दूर किया है।' (रिपोर्टर: J.A. Marrahi)

बालेंसिया: प्रांत की सबसे बड़ी इस्लामी प्रार्थनास्थल एक वास्तविकता का रूप धारण कर चुकी है। प्लाट का कुल क्षेत्रफल 5000 वर्ग मीटर है जिसमें से 1500 वर्ग मीटर छत वाली इमारत है जिसमें 260 लोगों के नमाज़ अदा करने के लिए एक हॉल बनाया गया है। मस्जिद का उद्घाटन शुक्रवार को La Pobla de Vallbona के एक उपनगरीय गांव San Martin La urbanizaco में होगा। यदि मस्जिद की वास्तुकला के संदर्भ में देखा जाए तो यह प्रांत बालेंसिया की दूसरी बड़ी इमारत है। और यह अल्लाह की उपासना करने वालों के 172 केंद्रों में से एक है जो प्रांत की सरकार ने विभिन्न जगहों पर लोगों को दिए हैं। इस मस्जिद के सभी खर्च अहमदिया जमाअत अंतर्राष्ट्रीय ने वहन किए हैं।

पिछले दिन पूरा दिन मजदूर, राजमिस्त्री, पेंटर और साउंड सिस्टम के विशेषज्ञ इसी जुनून में लगे थे कि जल्द से जल्द सारा काम शुक्रवार के प्रवचन से पहले-पहले पूरा कर लिया जाए। आज से सात साल पहले अहमदिया जमाअत अंतर्राष्ट्रीय के इमाम हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने बालेंसिया को उपयुक्त जगह समझते हुए यहां मस्जिद बनाने की ओर ध्यान दिया।

स्पेन में इस जमाअत की कुल संख्या 600 है। बालेंसिया में इस जमाअत की नींव 1979 ई. में पड़ी। दो दशक बाद जमाअत को एक प्लाट मिला और उसमें निर्मित एक मकान को उन्होंने प्रार्थनास्थल के रूप में इस्तेमाल करना शुरू किया। मस्जिद को एक स्पेनिश वास्तुकार ने इस जमाअत के वास्तुकला विशेषज्ञों की सहायता से डिजाइन किया। 2011 ई. में जब निर्माण का आरंभ हुआ तो निकट रहने वाले कुछ लोगों ने विरोध किया। उन्हें एक ओर अपनी सुरक्षा के संबंध में कुछ आशंकाएं थीं तो दूसरी ओर यातायात की संभावित भीड़ से वे चिंतित थे।

अहमदिया जमाअत को पाकिस्तान, इंडोनेशिया, बंगलादेश और सऊदी अरब में काफी विरोध का सामना है। कुछ लोगों को तो यह डर भी हुआ कि कहीं ये लोग कभी किसी बड़ी दुर्घटना का कारण ही न बन जाएं।

'नगरपालिका समिति और अहमदिया जमाअत के पदाधिकारियों ने पड़ोसियों से संपर्क स्थापित करने शुरू किए। और अब यह हाल है कि इस गांव के निवासी और यहां की जमीन के मालिकों के जमाअत के साथ बहुत अच्छे संबंध हैं।' इन विचारों का इजहार गांव की मेयर श्रीमती Mari Carmen Contelles साहिबा ने किया।

मस्जिद की एक दीवार पर यह स्पष्ट रूप से लिखा पढ़ा जा सकता है कि 'प्रेम सबके लिए, घृणा किसी से नहीं' और यही तो हमारी आत्मा की भी आवाज है।

अहमदिया जमाअत बालेंसिया के अध्यक्ष मंसूर अता इलाही ने कहा कि: 'हम चाहते हैं कि मस्जिद मुसलमानों, बालेंसिया के निवासियों, अपने पड़ोसियों और हर उस व्यक्ति के लिए जो हमारे बारे में जानना चाहे, एक घर की तरह हो।'

दसियों लाख लोग खलीफा के प्रवचन को टेलीविजन के माध्यम से सुन और देख सकेंगे।

ला पोबला दे बाईबोना (La Pobla de Vallbona) का स्थान अगले शुक्रवार बहुत सारी नजरों का केंद्र होगा।

दसियों लाख लोग हैं जो खलीफा हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ का प्रवचन टेलीविजन के माध्यम से देख सकेंगे जो कि बालेंसिया के एक उपनगरीय गांव में दिया जाएगा।

अहमदी मुसलमान दुनिया में यद्यपि संख्या के लिहाज से कम हैं तथापि अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर उनका प्रभाव क्षेत्र ध्यान देने योग्य है। इस जमाअत ने अब तक दुनिया के 200 देशों में लगभग 8000 मस्जिदें बनाई हैं। काफी मस्जिदें विभिन्न देशों की राजधानियों में भी बनाई गई हैं जैसे वाशिंगटन, लंदन, टोरंटो और ओस्लो।

इन मस्जिदों में से कुछ तो इतनी बड़ी हैं कि पश्चिमी दुनिया में उससे बड़ी बनाई ही नहीं जा सकतीं। अहमदिया जमाअत का 'मुस्लिम टेलीविजन अहमदिया' के नाम से अपना एक टेलीविजन है जिसके माध्यम से पूरी दुनिया में छह उपग्रहों के माध्यम से दुनिया भर के दर्शकों के लिए विभिन्न भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं।

शेष पृष्ठ 7 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें

नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India.
Editor:Shaikh Mujahid Ahmad